RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 25 सितम्बर 2019/ पोस्टिंग तिथि 29 सितम्बर

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका अक्टूबर 2019

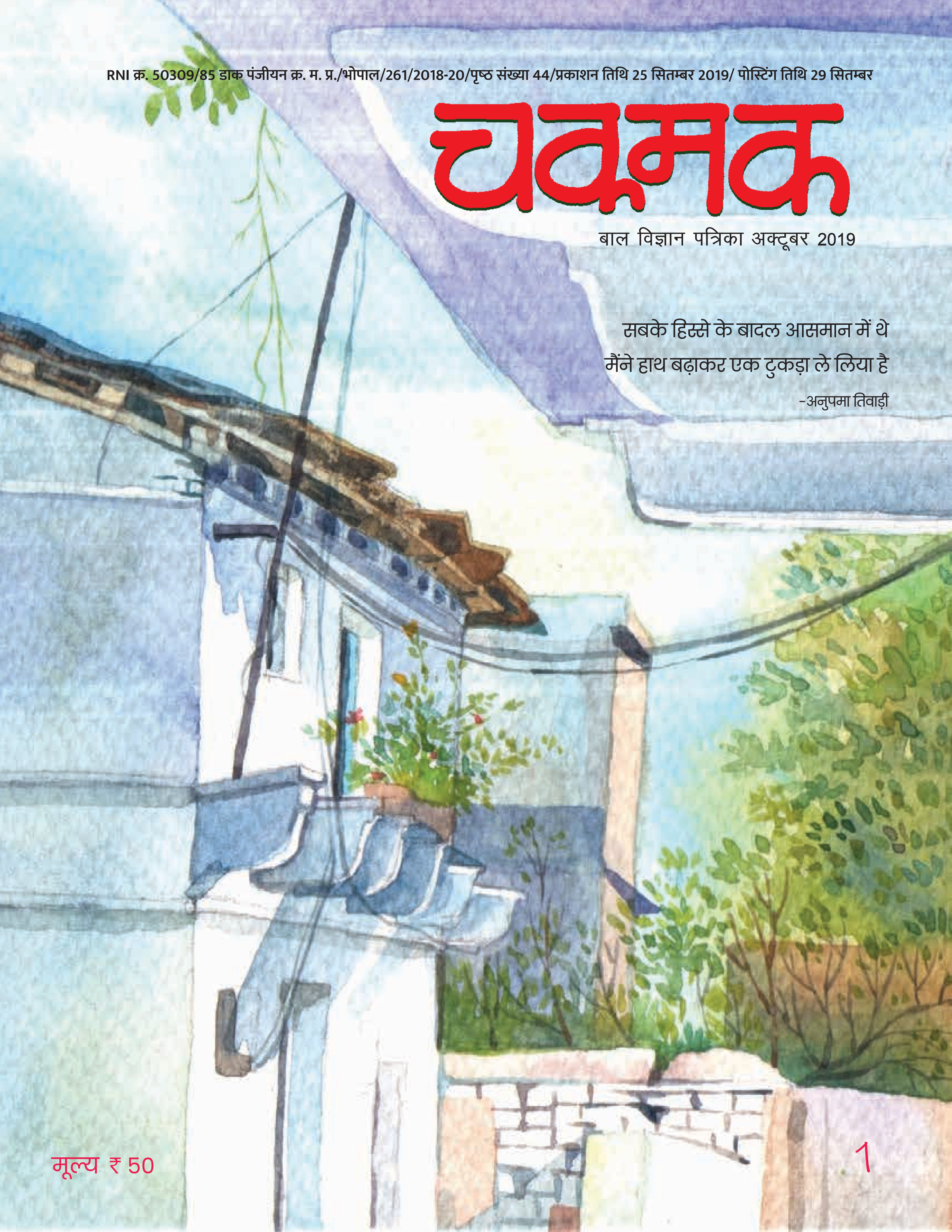

सबके हिस्से के बादल आसमान में थे
मैंने हाथ बढ़ाकर एक टुकड़ा ले लिया है

-अनुपमा तिवाड़ी

मूल्य ₹ 50

1

जम्बो हाथी

वैदेही पाटणे
चित्र: मयूख घोष

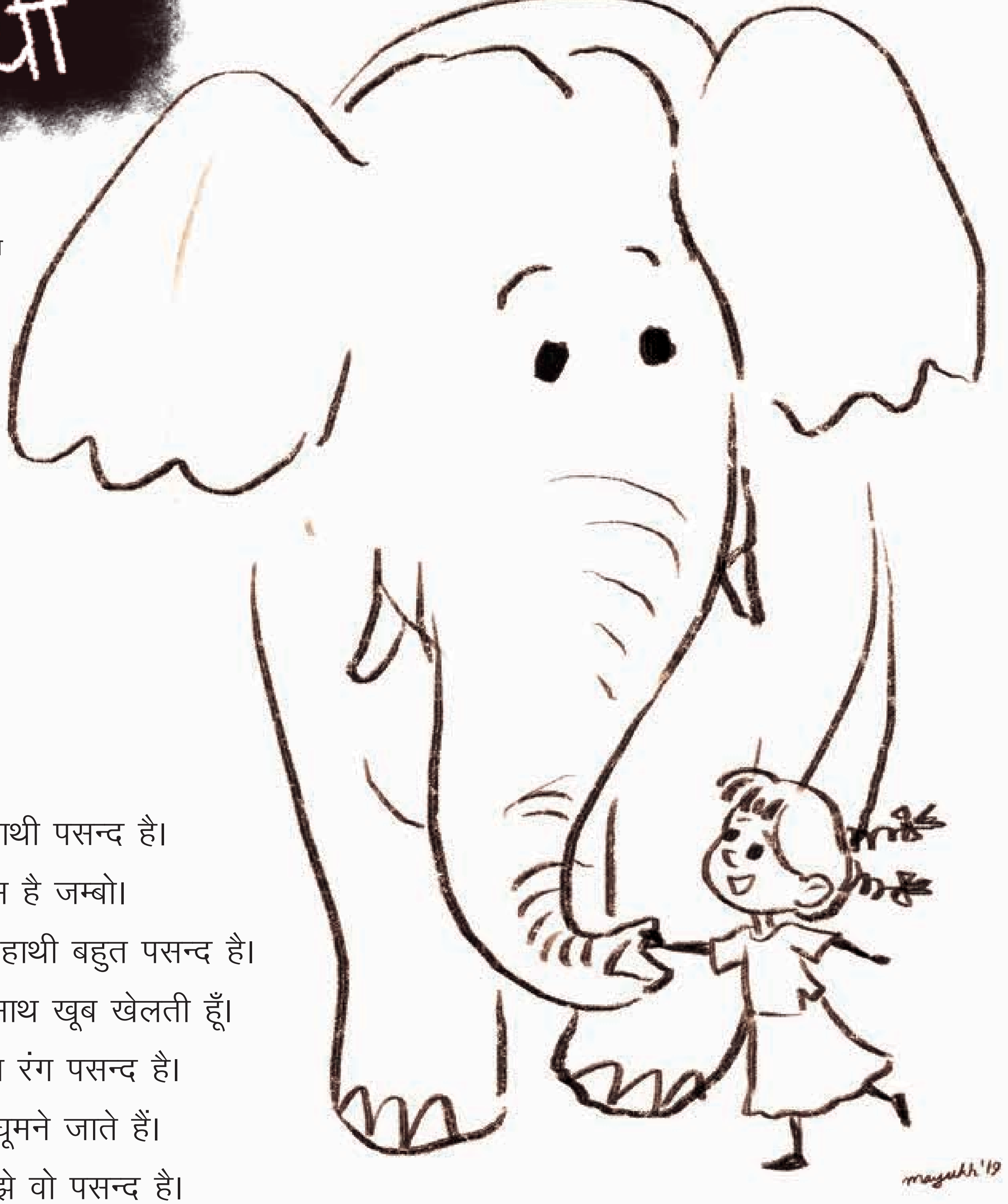

मुझे एक हाथी पसन्द है।
उसका नाम है जम्बो।
मुझे जम्बो हाथी बहुत पसन्द है।
मैं उसके साथ खूब खेलती हूँ।
मुझे उसका रंग पसन्द है।
हम दोनों घूमने जाते हैं।
इसलिए मुझे वो पसन्द है।
जम्बो और मैं साथ में टीवी देखते हैं
और गाना गाते हैं।

वैदेही पाटणे, दूसरी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

अंक 397 अक्टूबर 2019

चकमक

फफूँद

इस बार

जम्बो हाथी - वैदेही पाटणे 2
नितेश और बाज़ार - करन सिंह 4
हिंसा के दौर में पढ़ाई - सी एन सुब्रह्मण्यम् 6
भूल-भुलैया 8
वेटर का पहला दिन - तस्वीर 9
टीवी में - हर्षवर्धन कुमार 11
मुझे अतिरिक्त से शिकायत है - सुशील शुक्ल 12
किट्टू उड़नछू! - हर्षिका उदासी 13
कहीं तुम फफूँद तो नहीं खा रहे 17
मेरी उम्मीद की वजह - रुद्राशीष चक्रवर्ती 18
बूम - रोहन चक्रवर्ती 21
गुड़हल का फूल - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउण्डेशन 22
क्यों-क्यों? 24
चाँद और डुकरिया - मनोज साहू 'निडर' 28
क्या होता है साबूदाना - सजिता नायर 30
तुम भी बनाओ... अलमीरा 32
हाथी और चींटी - प्रभात 34
मेरा पन्ना 35
तुम भी जानो 40
माथापच्ची 41
चित्रपहेली 43
तिलचट्टे - श्रवण कुमार 44

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

आवरण चित्र: शुभम लखेरा

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
एकलव्य फाउण्डेशन, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026, फोन: +91 755 2977770 से 3 तक
email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

नितेश और बाज़ार

करन सिंह
चित्र: नीलेश गेहलोत

वह अपनी माँ के साथ जाने वाला था। एक रात पहले ही उसने सारी तैयारी कर ली थी। सुबह होते ही माँ ने सब्ज़ी की टोकरी सिर पर रखी, झोला उसे पकड़ाया और बोलीं, "फटाफट चल, नहीं तो गाड़ी निकल जाएगी।" अपने नन्हें कदमों से वह बहुत तेज़ नहीं चल पा रहा था। फिर भी वह बराबर पर चलने की कोशिश करने लगा। खेत की मेड़ पतली थी इसलिए नितेश माँ के आगे-आगे चल रहा था। जल्दी ही वो दोनों कच्ची सड़क तक पहुँच गए। पक्की सड़क वहाँ से कुछ ही दूरी पर थी। "गाड़ी यहीं पर आएगी।" माँ ने पक्की सड़क की ओर इशारा करते हुए कहा। नितेश बहुत खुश था क्योंकि आज वह पहली बार बाज़ार जा रहा था। पहले भी कई बार उसने ज़िद की थी, पर माँ हर बार मना कर देती थीं। लेकिन इस बार न जाने क्यों माँ ने हाँ कर दी। वह खुशी से पागल हो रहा था कि तभी खचाखच भरी एक डग्गा मार गाड़ी वहाँ पहुँची। देखकर तो लग रहा था कि पैर रखने भर की जगह भी नहीं है, लेकिन जैसे-तैसे दोनों बैठ गए।

नितेश का मन खुशी से नाचने लगा। वह सोचने लगा कि आज तो बहुत मज़ा आएगा। सब्ज़ी बिकने के बाद खूब सारी चीज़ें खाऊँगा, खिलौने खरीदूँगा और कल स्कूल में सबको चिढ़ाऊँगा। छोटी बहन के लिए डमरु लाऊँगा। पापा ने आते समय उनकी फटी एड़ियों की दवाई के लिए कहा था, वो भी ले लूँगा। और जैसे बबलू अपनी बकरी के गले में घुँघरु बाँधता है ना, वैसे ही मैं भी अपनी बकरी के लिए लाऊँगा। यही सब सोचते-सोचते उसे नींद आ गई।

कुछ देर बाद माँ ने नितेश को जगाया और कहा, "उतर जल्दी से, बाज़ार आ गया है।" वह आँखें मलते हुए नीचे उतरा और इतने सारे लोगों का जमावड़ा देख हैरान-सा रह गया। फिर दोनों ने पेड़ के नीचे एक सही जगह देखकर टोकरी रख दी और बैठ गए। कई लोग आते, सब्ज़ी के भाव पूछते और आगे बढ़ जाते। इक्के-दुक्के लोग रुकते और कुछ खरीद लेते थे। दिन चढ़ आया था। नितेश को भूख लगने लगी। उसने माँ की तरफ देखा। माँ समझ गईं। फिर माँ ने अब तक बिकी हुई सब्ज़ी के पैसों को गिना और चालीस में से बीस रुपए उसको दे दिए। वह जल्दी से गया और पकौड़ी लेकर खाने लगा। आते-आते माँ के लिए भी पकौड़ियाँ ले आया। माँ ने पकौड़ियाँ अपनी साड़ी के पल्लू से बाँध लीं और कहने लगीं कि बाद में खाऊँगी।

शाम को जब बाज़ार उखड़ने लगा तब माँ ने सारे पैसे फिर से गिने। कुल साठ रुपए निकले, जिसमें से तीस रुपए वापिस जाने का किराया था। फिर बची हुई सब्ज़ी को सिर पर रखकर, घर जाने की तैयारी करने लगीं। नितेश के हाथ में दस रुपए पकड़ाते हुए माँ ने इशारा किया कि पापा के लिए मलहम ले लो। मलहम खरीदते समय नितेश के अल्हड़ मन में बहुत-से सवाल उठ रहे थे। छोटी बहन के डमरु का क्या होगा, बकरी के घुँघरु का क्या होगा और खिलौनों का? इन सभी सवालों के बीच नितेश माँ के साथ गाड़ी में बैठ गया। नितेश को गुस्सा आ रहा था कि माँ ने उसे पैसे क्यों नहीं दिए, क्यों उसे कुछ खरीदकर नहीं दिया? वह माँ की ओर गुस्से से देखता रहा। पूरे रास्ते यही सोचता रहा कि कभी इनके साथ बाज़ार नहीं आऊँगा।

घर पहुँचने के बाद माँ ने साड़ी में बँधी हुई पकौड़ियाँ निकालकर नितेश की छोटी बहन को दे दीं। वह बहुत खुश हुई। माँ ने नितेश की रोनी सूरत देखी और उसे अपने पास बुलाया। प्यार से सिर पर हाथ फेरा और कहा कि अगले बुधवार फिर से बाज़ार चलेंगे, तब तुझे तेरे मन की सारी चीज़ें दिलाऊँगी। नितेश वहाँ से उठा और अपने मेमने के साथ जाकर खेलने लगा।

हिंसा के दौर में पढ़ाई

सी एन सुब्रह्मण्यम्

जुलाई 2017 को अहसान बशीर को 300 पैलेट गोलियाँ लगीं। पैलेट गोलियाँ आम गोलियाँ नहीं होतीं। ये बहुत बारीक लोहे की गोलियाँ होती हैं। इनके लगने से लोग आमतौर पर मरते नहीं हैं, मगर जीवन भर के लिए घायल या अपाहिज हो सकते हैं। इनमें से पाँच गोलियाँ अहसान के चेहरे में लगीं और उसकी आँखों में घुस गईं। इन गोलियों को निकालने के लिए अहसान पर कई ऑपरेशन किए गए। लेकिन उसकी दाहिनी आँख में तीन गोलियाँ अब भी हैं। डॉक्टर मानते हैं कि उनको निकालने में काफी खतरा है। इसके चलते अहसान कुछ हद तक अन्धा हो गया है।

अहसान सत्रह साल का था जब यह हादसा हुआ। एक महीने बाद उसकी दसवीं की परीक्षा होने वाली थी, लेकिन वो परीक्षा में नहीं बैठ पाया। वो अपनी पढ़ाई पूरा करना चाहता था, सो अगले साल वापिस स्कूल गया। पहली बैंच में बैठने के बाद भी बोर्ड पर नज़र टिकाए रखना उसके लिए मुश्किल हो गया था। उसकी आँखें लाल हो जातीं। उनमें से पानी बहने लगता। सिर्फ यही नहीं, वो किसी भी चीज़ पर दस मिनिट से ज़्यादा समय ध्यान नहीं दे पाता था। धूप में उसकी आँखें ऐसे जलतीं जैसे तन्दूर में गर्म होता हुआ कोई लोहा। इन सबके बावजूद अहसान अपनी परीक्षा में पास हुआ। वह आगे जाकर पत्रकार बनना चाहता था।

15 साल की उलफत हमीद की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। उलफत 2016 में पैलेट से घायल हुई। दो ऑपरेशन के बावजूद डॉक्टर उसकी बाईं आँख नहीं बचा पाए। हादसे से पहले उलफत अपनी पढ़ाई के साथ-साथ सिलाई करके कुछ रुपये भी कमाती थी और घर चलाने में अपने पिता की मदद करती थी। अब वो न तो सिलाई कर पाती है और न ही स्कूल जा पाती है। उसकी आँख में 10 पैलेट आज भी हैं और वह अकसर सिरदर्द का शिकार होती है। साथ ही उसे उस हादसे के भयानक सपने भी आते हैं।

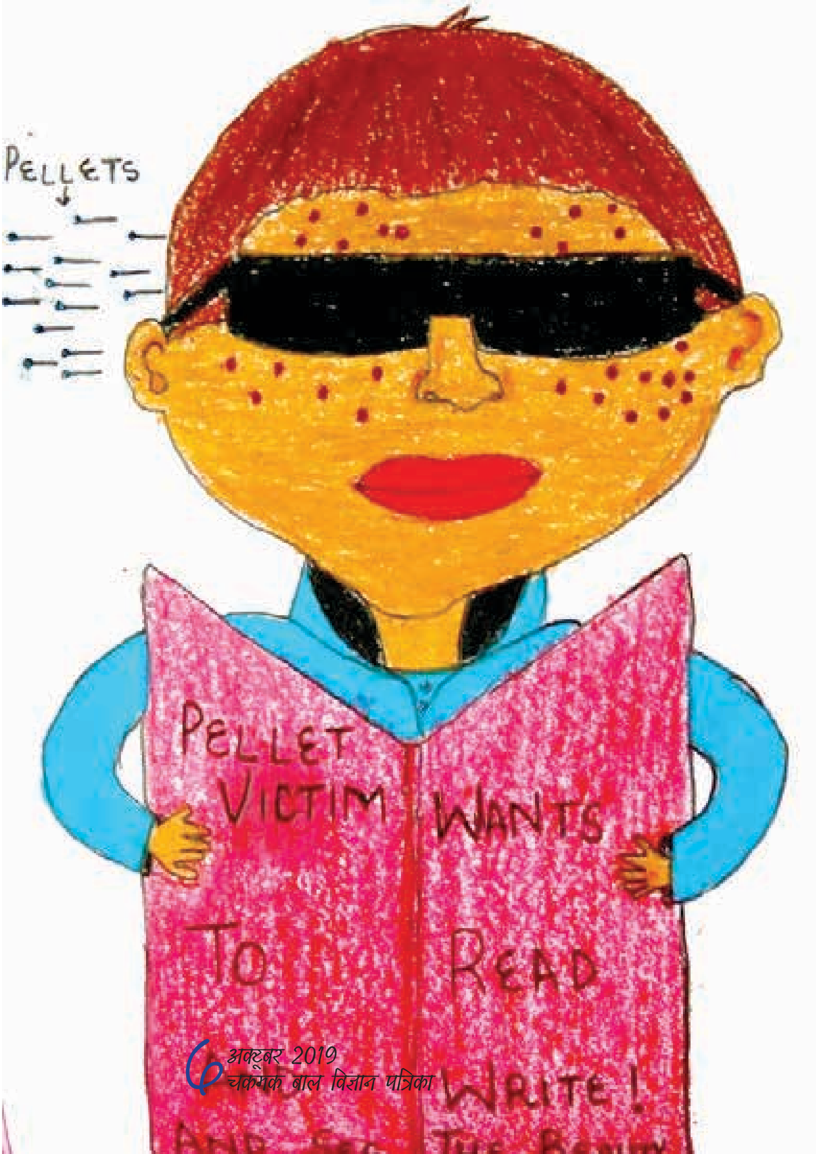

हिंसा का एक लम्बा दौर

अहसान और उलफत को पैलेट गोली क्यों लगीं, यह बताना मुश्किल है। उनके जैसे बहुत-से युवा कश्मीरी पुलिस या सेना के जवानों पर पत्थर बरसाते थे, तो सैनिक उन पर पैलेट गन चलाते थे। आखिर इससे वे मरेंगे नहीं, लेकिन ज़िन्दगी भर याद रखेंगे। कभी ऐसा भी होता कि जब गली में कोई वारदात हो रही हो और कोई बच्चा गलती से खिड़की खोलकर देखने लग जाए, तो उसे भी गोलियाँ लग जातीं।

इससे भी दुखद बात यह है कि यहाँ के लगभग हर परिवार का कोई न कोई सदस्य अलगाववादी और सेना के बीच की मुठभेड़ों में मारा गया है। यहाँ ऐसा कोई घर नहीं है, जहाँ के लोग अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं।

पिछले तीस साल में कश्मीर के लोगों ने बहुत दुख, दर्द, दमन और प्रताड़ना झेली है। और उसका बहादुरी के साथ सामना भी किया है। यह कभी कविता और साहित्य का रूप लेता है, तो कभी शान्तिपूर्वक असहयोग का या कभी पथराव का।

स्कूल कब जा पाएँगे ये बच्चे?

हाल ही में भारत की संसद ने कश्मीरियों के अधिकारों, राजकाज के तरीकों और अन्य बातों को लेकर बहुत महत्वपूर्ण फैसले लिए हैं। यह सही हैं या गलत, इस पर मतभेद और बहस हो सकती है। मगर इसको लेकर वहाँ के लोगों की प्रतिक्रिया क्या है, उनके विचार और सुझाव क्या हैं, इन सबको कहना-सुनना बहुत ज़रूरी है। यह इसलिए कि हम एक तानाशाही व्यवस्था नहीं चाहते हैं। हम जम्हूरियत या लोकतंत्र की बात करते हैं। हमारे संविधान में लोकतांत्रिक अधिकारों का वादा है। खुलकर चलने-फिरने, अपनी बात कहने-सुनने, आपस में मेलजोल करने, अपने विचारों के अनुरूप जीने के अधिकार इन सब पर जब वहाँ अमल होगा, तभी अहसान और उलफत सारी परेशानियों के बावजूद स्कूल जाएँगे, पढ़ेंगे।

आज बसील खान और उसके दोस्त स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। मौका मिलने पर वो क्रिकेट खेल लेते हैं। श्रीनगर के अपने घर के बाहर खड़ा बसील खान कहता है, “आए दिन प्रदर्शन और झगड़े हो रहे हैं। मैं जब सैनिकों को बन्दूक और लाठियों के साथ सड़कों पर देखता हूँ, तो बहुत घबरा जाता हूँ।” फिर वह मुस्कराते हुए कहता है, “स्कूल के दिन सबसे अच्छे होते हैं, मगर क्या करें?”

कब कश्मीर में गोलियाँ चलना बन्द होंगी? कब वहाँ के लोगों को अमन और गरिमा के साथ जीने को मिलेगा? अहसान, उलफत, बसील और उनके तमाम दोस्त कब स्कूल जा पाएँगे?

बसील और उसके दोस्त क्रिकेट खेलने के बाद

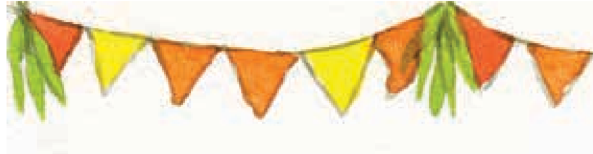

वेटर का पहला दिन

मैं जब पहली बार वेटर के काम पर गया तो बड़ा उत्साहित था। इसलिए नहीं कि मैं काम पर जा रहा हूँ, बल्कि इसलिए कि मुझे वहाँ बहुत सारा खाना मिलने वाला था। खासकर आइसक्रीम, जो मुझे बड़ी पसन्द थी। मैंने 8-9 साल की उम्र से कबाड़ बीनना शुरू कर दिया था। कभी माँ के साथ जाता तो कभी अपनी उम्र के दोस्तों के साथ।

अपने दोस्तों में मैं सबसे छोटा था और बड़े-बड़े भगोने नहीं उठा पाता था। लेकिन छोटे भगोने व बर्तन साफ करना, गैस-चूल्हा, सिलेंडर साफ करना जैसे छोटे-मोटे काम कर लेता था। वो ठेकेदार मुझे अपने काम के 80 रुपए देता था। इसके बदले मुझे 15-16 घण्टे काम करना पड़ता था।

उस दिन मैंने पहली बार दोस्तों के संग बर्तन साफ किए थे। मैंने देखा कि हलवाई खाना बनाने में लगे हैं। कोई पनीर बना रहा है, तो कुछ महिलाएँ पूरी का आटा गूँथने में लगी हैं। हर तरफ बड़े-बड़े चूल्हे जल रहे थे जिनमें गुलाबजामुन, गाजर का हलवा और कई तरह की सब्ज़ियों के भगोने चढ़े हुए थे। हम लोगों को काम करते-करते दोपहर हो गई थी तो ज़ोरों की भूख भी लग आई थी।

तस्वीर
चित्र: हबीब अली

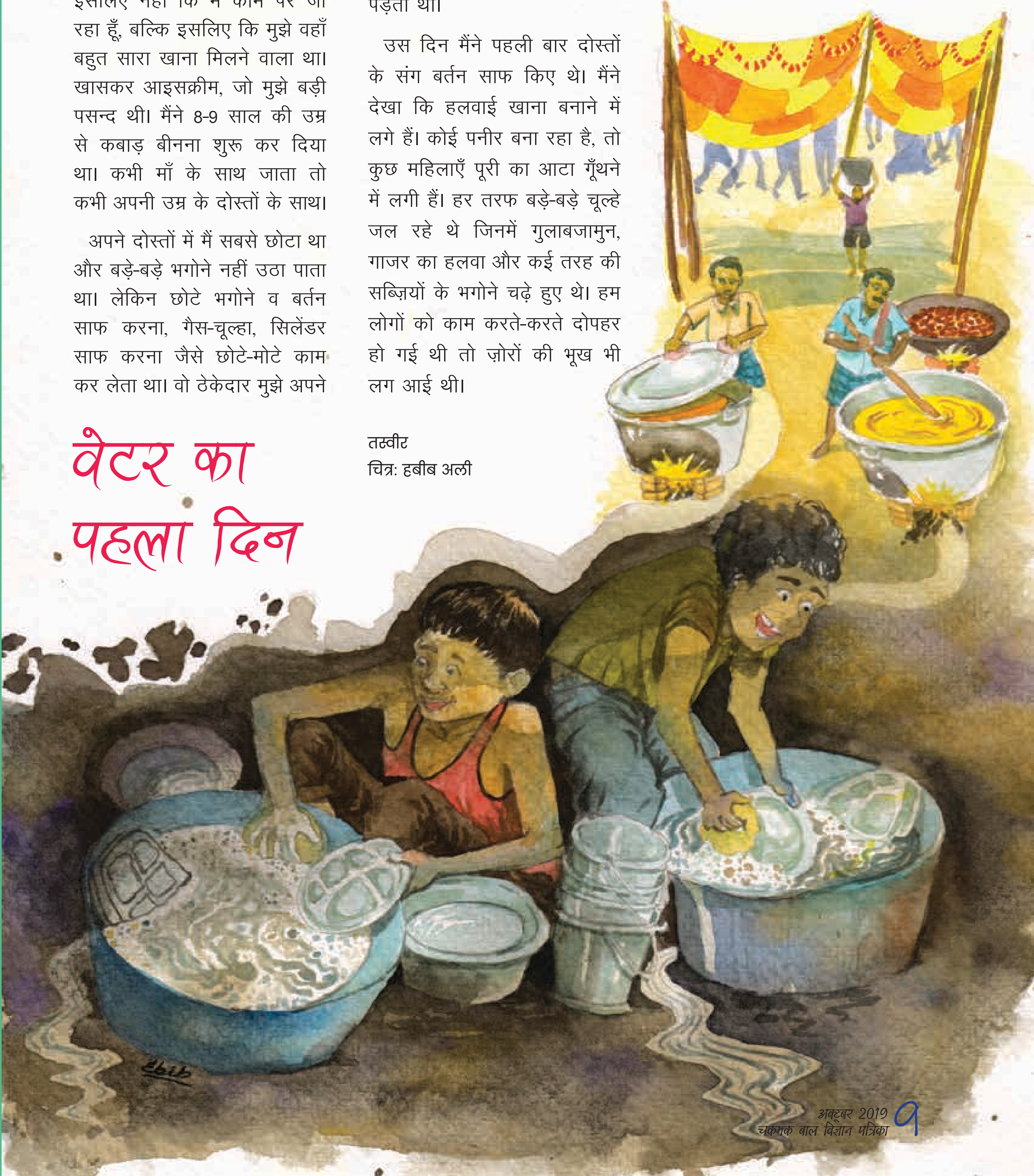

मेरी बस्ती का एक बड़ा लड़का हमारे लिए आधा भगोना खिचड़ी लेकर आया। वह बस्ती से लड़कों को काम पर ले जाने की ठेकेदारी करता था। वो खिचड़ी भी क्या खिचड़ी थी, गरमा-गरम। थोड़ी देर पहले ही बनी थी। बड़ी स्वादिष्ट और चरखी (तीखी)! मैंने तो मज़े में एक प्लेट भर ली। गर्म होने के कारण हम सब खिचड़ी धीरे-धीरे खा रहे थे।

काम सब बिखरा पड़ा था। और तभी हमारा ठेकेदार आ गया। वह गाली देकर बात कर रहा था। साँझ हो चुकी थी और खाने के स्टॉल भी लगाने थे। समझ नहीं आ रहा था कि इतनी जल्दी कैसे कर पाएँगे। जिन टेबल से स्टॉल बनने थे, गर्मी के कारण वे आग जैसे उबल रहे थे और भारी भी थे। जल्दी के चक्कर में दोनों हाथों में एक-एक टेबल लेकर मैदान में भागना पड़ा। झटपट टेबल जमाकर हमने जैसे-तैसे स्टॉल तो लगा ही दिए। मेरे हाथों में जलन मच रही थी। काम खतम होने के बाद थोड़ी देर बैठे ही थे कि ठेकेदार चिल्लाते हुए आया और बोला, "ये प्लेट साफ कर लो, जल्दी। खाना चालू होने वाला है।"

वहाँ से उठकर हम 8 लोग प्लेट पोंछने में लग गए। पोंछते-पोंछते हम बातें भी करते जा रहे थे और मोबाइल में गाना भी सुन रहे थे। कुछ दोस्त गुटखा भी खा रहे थे। कुछ हँसने वाली बात भी चल रही थी। बातों-बातों में हमने 1000 प्लेटें कब पोंछ दीं, पता ही नहीं चला। फिर हम पानी पीकर दीवार की छाँव में बैठ गए। मुझे गर्मी से नींद बहुत आती है तो मैं वहाँ टेबल की आड़ में बोरी बिछाकर सो गया। साँझ धीरे-धीरे रात की ओर बढ़ रही थी। हम जिस मैदान में काम कर रहे थे, रात की ढेर सारी रोशनी में वो पक्का चाँद-सा खूबसूरत लग रहा था।

जो बड़े लड़के थे, वे सारी व्यवस्था के बाद खाने के काउंटर सँभालने में लग गए। दो जो छोटे थे, साहिल और मैं, मैदान में साफ-सफाई देख रहे थे। थोड़ी देर में खाना चालू होने वाला था। देखने में तो यह शादी का रिसेप्शन लग रहा था। इतनी देर में ठेकेदार चिल्लाते हुए आया। ठेकेदार बड़ा गुस्से वाला था। साँझ होते ही दारू पीकर साइट पर आ गया और सब पर भड़कने लगा, "काम नहीं किए हो?" "अभी तक पानी क्यों नहीं आया, खाना चालू होने वाला है?" "तुम क्या कर रहे हो?" उसे बस सही वक्त पर काम करवाना था। सब कुछ सेटल करते-करते साढ़े सात बज गए थे। मेहमान धीरे-धीरे आते गए और खाना शुरू हो गया। मैदान के बीच कचरा-डिस्पोजल फैल ना जाए इसलिए मैं और साहिल फेरी लगाते रहे। हम फटाफट डस्टबिन खाली करते जा रहे थे।

इस तरह काम करते-करते रात के डेढ़ बज गए थे और भूख भी लगने लगी थी। लोगों का आना-जाना तो लगा रहेगा, लेकिन भूख का क्या! सब्र करने जैसी कोई बात ना थी। जिधर देखो, उधर खाना ही खाना। ऐसे में भूख को रोक पाना बहुत मुश्किल हो रहा था। हमने सोचा काउंटर के पीछे जाओ, जो दिखे खा लो, चाउमीन, कोल्ड्रिंक, हलवा...। इस तरह पेट की थोड़ी हलचल तो बन्द हो गई। कचरा भरने या उठाने के समय अकसर भीड़ में हम लोगों से टकरा जाते तो वे हमें गाली देते। कभी-कभी मार भी देते थे।

रात के ढाई बज गए थे। जो लोग खाने आए थे वे सब घर जाने में लगे थे। साइट का सारा सामान रखने-समेटने में देर हो गई थी और अभी तक पेट भर खाना भी नहीं खाया था। सेठ बोला, "लड़को, तुम खाना खाओ, बाकी सब बाद में करना।" हम सबने झटपट प्लेट लगाई और खाना खाने बैठ गए। आइसक्रीम का एक पूरा डिब्बा बचा था जो गर्मी के कारण पिघली जा रही थी। सेठ ने उसे मुझे दे दिया और बोला, "सब खा लो।" खाने के बाद आखिरी काम रह गया था कि इतने बचे हुए खाने का क्या करें। हम बचे हुए खाने को घर ले गए। उस दिन हम सुबह के 4 बजे घर पहुँचे।

टीवी में

हर्षवर्धन कुमार
चित्र: मयूख घोष

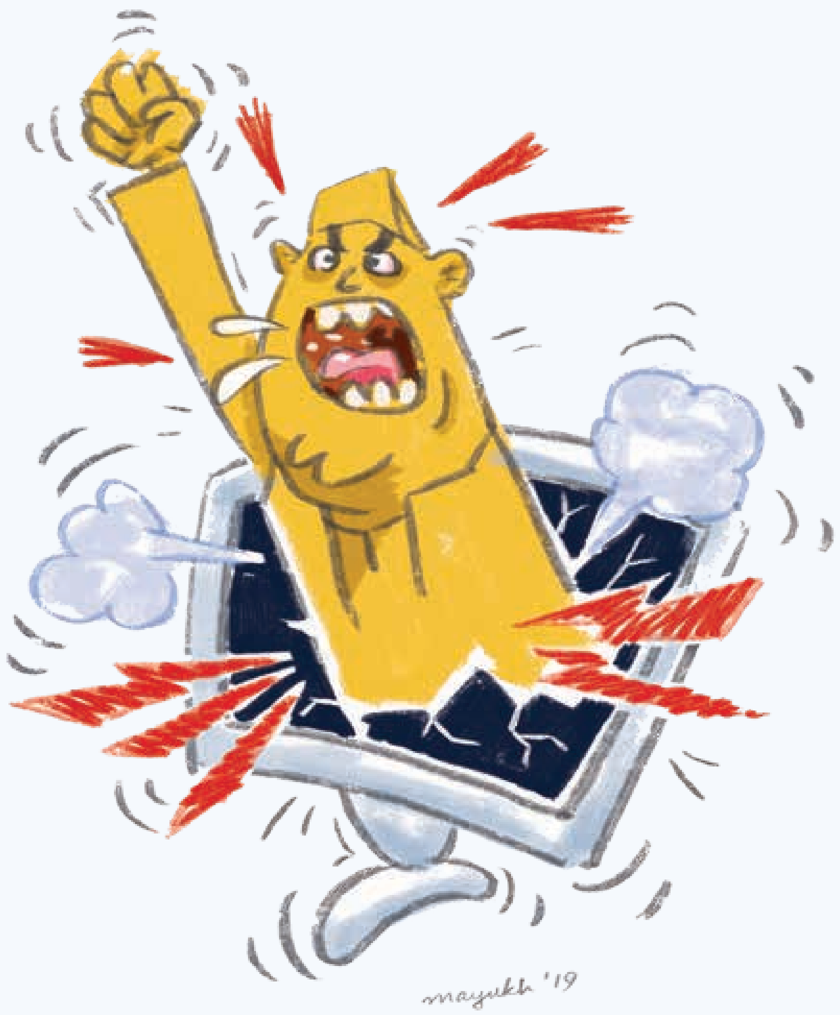

जाने पापा टीवी में क्या देखते हैं,
उसमें सब लोग बेवजह चीखते हैं।
अपनी बात वो धीरे-से भी तो कह सकते हैं,
और नहीं तो कभी चुप भी तो रह सकते हैं।

मुझे अतिरिक्त से शिकायत है

सुशील शुक्ल
चित्र: कनक शशि

मुझे त्यौहार अच्छे नहीं लगते। त्यौहारों में सब ज़्यादा-ज़्यादा होता है। अतिरिक्त।

मुझे ज़्यादा से, अतिरिक्त से शिकायत है, क्योंकि ज़्यादा कहीं भी होता है तो कम मुझे ही पड़ता है।

कहीं खाना ज़्यादा होता है तो मेरा खाना ही मुझे महँगा पड़ जाता है। और महँगा पड़कर कम हो जाता है। ज़्यादा रोशनी का सारा अँधेरा मेरे हिस्से आता है।

दीवाली के दिए देखता हूँ। उनकी फड़फड़ाती लौ। तुमने कभी डरी हुई छिपकली को पूँछ छोड़ते देखा है?

देखना। जब वह बहुत डर जाती है तो अपना थोड़ा-सा डर पूँछ में छोड़कर भाग जाती है।

पूँछ को फड़फड़ाते देखना। फिर दीवाली के दियों की लौ को देखना।

मुझे इन दियों की रोशनी छिपकली की पूँछ की तरह फड़फड़ाती दिखती है।

छिपकलियों को बिजली की रोशनी बहुत पसन्द है। यह रोशनी छिपकली की मदद करती है।

सूरज की रोशनी से मुझे हिम्मत मिलती है। मैंने कभी सूरज की रोशनी को छिपकली की पूँछ की तरह डरकर फड़फड़ाते नहीं देखा है। सूरज की तेज़ रोशनी में मेरा शरीर पसीने की असंख्य बूँदों से भर जाता है। तब मेरा शरीर देखना। मेरे शरीर पर असंख्य दिए छलछला उठते हैं। मेरे घर की रोशनी का सारा इन्तज़ाम यहीं से होता है।

मेरी दीवाली कभी रात में नहीं आती।
मैं तुम्हारे आसपास ही कहीं रहता हूँ।
तो इस हिसाब से तुम्हारा पड़ोसी हुआ न?
मेरे प्रिय पड़ोसी, तुम्हें दीवाली मुबारक हो!

फ्लाइंग मशीन

हर्षिका उदासी
अंग्रेज़ी से अनुवाद: भरत त्रिपाठी
चित्र: लावण्या नायडू

यह हर्षिका उदासी की अंग्रेज़ी किताब *Kittu's Very Mad Day* का हिन्दी अनुवाद है।

अब तक तुमने पढ़ा :
किट्टू अपने चौदह लोगों के परिवार के साथ सैर के लिए पन्ना जाता है। लौटते समय वह एक ढाबे पर छूट जाता है, जहाँ उसकी मुलाकात माधव नाम के आइसक्रीम वाले से होती है। जब किट्टू उसे बताता है कि वह खो गया है तो माधव उसे पुलिस स्टेशन ले जाने लगता है। तब किट्टू माधव को अपने पिता के डॉन होने की ऐसी कहानी बताता है कि डरकर वह उसे अपने घर ले आता है। अपने अजीबोगरीब परिवार से अलग होकर किट्टू को मज़ा आ रहा होता है। लेकिन माधव की बेटी मधेश्वरी यानी 'मैड' को किट्टू का आना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। खजुराहो पहुँचकर परिवार वालों को एहसास होता है कि किट्टू गुम हो गया है। वे उसे ढूँढने वापिस निकलते हैं। माधव भी किट्टू के माता-पिता से सम्पर्क करने की कोशिश करता है, लेकिन कर नहीं पाता है। इधर किट्टू मैड का स्केटबोर्ड लेकर चम्पत हो जाता है।

अब आगे...

इस शान्त और सुस्त-से गाँव के बीचों-बीच ये कैसी और क्या जगह थी? वहाँ ढालू रैम्प बने हुए थे, जहाँ छोटे-बड़े हर तरह के बच्चे...स्केटबोर्डिंग कर रहे थे? क्या ये कोई सपना था? एक छोटी लड़की तो पोटू की उम्र की लग रही थी!

किट्टू ने जल्दी से चारों तरफ अपनी नज़रें दौड़ाईं। ये स्केट पार्क बिलकुल खुली जगह थी जहाँ कहीं कोई दीवार नहीं थी। और पूरी जगह में रंग-बिरंगे खूबसूरत चित्र बने हुए थे। किट्टू को तो अपनी आँखों पर भरोसा ही नहीं हुआ।

वो मैड को देखने के लिए मुड़ा जो मानो तूफान बन गई थी!

किट्टू ने हमिंगबर्ड (गुंजन पक्षी) के बारे में पढ़ रखा था, जो दुनिया के सबसे छोटे आकार के, पर सबसे तेज़ उड़ने वाले पक्षियों में से हैं। ये पक्षी पीछे की तरफ भी उड़ सकते हैं। इस समय मैड को देखकर किट्टू को उसी पक्षी की याद आ रही थी, बस एक ही फर्क था कि मैड आकार में उतनी छोटी नहीं थी। मैड तो काफी लम्बी थी, किट्टू से भी लम्बी। अब किट्टू खुद को उन मूर्खतापूर्ण बातों के लिए कोस रहा था जो कुछ ही मिनट पहले उसने मैड से कही थीं। वो मैड को एकटक देखे जा रहा था। उसके मन में अब मैड के लिए इज़्ज़त पैदा हो गई थी।

"तो मैंने इसे चुराया है, है ना?" किट्टू के पास से गुज़रती हुई मैड ज़ोर-से चिल्लाई।

"देखो मैं माफी माँगता हूँ। मैंने पागलपन में वो सब बातें कह दी थीं।" किट्टू ने झेंपते हुए कहा।

"वाकई? पागलपन में? मुझे लगा था कि पागल (मैड) तो मैं हूँ, तुम नहीं," मैड ने आँखों में चमक के साथ बत्तीसी दिखाते हुए जवाब दिया।

इस बात पर किट्टू ऐसा हँसा मानो खर्राटे मार रहा हो। उसका परिवार हमेशा से ही उसकी इस घर्र-घर्र-घर्र वाली हँसी का बहुत मज़ाक उड़ाया करता था। उसकी हँसी की आवाज़ बहुत ही अजीब थी लेकिन सामने वाले पर इस कदर असर करती थी कि वो भी हँसे बिना नहीं रह पाता था।

और मैड के साथ भी यही हुआ। किट्टू की हँसी सुनकर मैड बहुत ज़ोर-से हँस पड़ी। इतनी ज़ोर-से हँसी कि स्केटबोर्ड पर से फिसल पड़ी।

हँसी का ये सिलसिला काफी देर बाद रुका।

किट्टू ने मैड से पूछा कि क्या वो उसका स्केटबोर्ड हाथ में ले सकता है।

“इसमें पूछने की क्या ज़रूरत है? मुझे तो लगा था कि अब हम दोस्त बन चुके हैं।” किट्टू को डपटते हुए मैड बोली।

“क्या वाकई? मुझे तो लगा था कि तुम मुझसे नफरत करती हो क्योंकि मैं ज़बरदस्ती तुम्हारे घर में घुस आया। मैंने देखा था जब मुझे तुम्हारी रोटी दे दी गई थी तो तुम मुझे कितने गुस्से से देख रही थीं।” किट्टू ने शिकायती लहज़े में कहा।

“पर अभी हम लोग साथ में हँसे ना, जिसका मतलब है कि हम दोस्त बन गए हैं। क्या तुम्हें हँसी की इस जादुई बात के बारे में नहीं पता?” मैड ने आश्चर्यचकित होकर किट्टू की तरफ देखा।

“नहीं। कौन-सी बात?” किट्टू ने पूछा। उसे लग रहा था कि मैड वाकई पागल है।

“तुम शहर के लोग बहुत ही उबाऊ और बेवकूफ होते हो। तुम लोगों को हर चीज़ समझानी पड़ती है। ध्यान से सुनो: अगर दो लोग एक साथ हँसते हैं तो वो दोस्ती के रिश्ते में बँध जाते हैं। इसे कहते हैं हँसी की डील, मतलब तुम उस व्यक्ति के साथ नहीं लड़ सकते जिसके साथ तुम हँसे हो। उस दोस्त के साथ तुम ऊँची आवाज़ में बात भी नहीं कर सकते। तुमको उसके साथ हर कीमती चीज़ बाँटनी पड़ती है, सिर्फ उस एक कीमती चीज़ की वजह से जो तुमने उसके साथ बाँटी है – तुम्हारी हँसी! समझे?” वो रुक गई।

“नहीं समझा। ये तो कुछ ज़्यादा ही फिलॉसफी हो गई।” किट्टू ने कन्धे उचकाते हुए अपना सन्देह जताया।

“तुम तो कद्दू हो।”

“हँसी की डील के बाद तुम मुझे ऊटपटाँग नाम से नहीं बुला सकतीं और मेरा मज़ाक नहीं बना सकतीं,” किट्टू ने आँख मारते हुए कहा। “क्या मैं स्केटबोर्ड ले लूँ प्लीज़?”

मैड ने स्केटबोर्ड किट्टू के आगे रख दिया, और वो नीचे बैठकर इस ‘कला के नमूने’ को ध्यान से देखने लगा। उसे देखकर किट्टू ने सोचा कि जिस किसी ने भी चार पहियों वाले इस सामान्य से तख्ते की कल्पना की होगी, उसे नोबेल पुरस्कार या कोई ओलम्पिक मेडल या कोई और पुरस्कार मिलना चाहिए। उसने अपनी उँगलियाँ मिट्टी में सने पहियों पर घुमाईं, और बोर्ड के घुमाव को महसूस किया।

अचानक से उसके दिमाग में एक खयाल आया। “मैं चलाने की कोशिश करूँ?” उसने मैड से पूछा, हालाँकि उसे मैड के जवाब की नहीं पड़ी थी।

“मतलब इसे चलाने की कोशिश?” मैड को समझ नहीं आया कि वो क्या जवाब दे तो उसने किट्टू की बात ही दोहरा दी।

“यहाँ इसके अलावा और क्या है, पागल?” किट्टू बोला।

उधर रैन बसेरा ढाबे में दुनिया के सबसे अजीबोगरीब परिवार के 13 सदस्य ढाबे के मालिक से सवाल-जवाब कर रहे थे – ज़ाहिर-सी बात है एक साथ, एक ही समय पर।

“हमारे साथ एक बच्चा था। क्या आपने उसे देखा था? वो बैसाखियों के सहारे चलता है। क्या आपने हमारे जाने के बाद उसको देखा?”

“क्या आपके ढाबे के किसी और व्यक्ति ने उसे देखा?”

“टॉयलेट कहाँ है? हो सकता है वो वहाँ गया हो।”

“क्या आपके पास बटर नान है?”

“वैं...वैं!!!”

“आप किस किस्म के ढाबा-मालिक हो? आपके ढाबे में सीसीटीवी कैमरा क्यों नहीं लगा है?” आखिरी के दो बम इती फुई ने फेंके थे।

“बहुत हो गया!” रंजीत चौधरी खीझकर चिल्लाया। “चुप हो जाओ। मैं हर सवाल का जवाब दूँगा।” चिल्लाने के बाद थोड़े नरम लहज़े में उसने कहा। उनके बेमेल सवालों के बीच में उसने किसी तरह इतना तो समझ लिया था कि उन लोगों के साथ आया एक 10 साल का लड़का खो गया है जो बैसाखियों के सहारे चलता है।

“मैडम, आप,” माँ की तरफ तिरछी निगाहों से देखते हुए उसने कहा। “मुझे नहीं लगता कि मैं आपके परिवार को कभी भी भूल सकता हूँ जिन्होंने तीन बार मेरे वेटर से ऑर्डर रद्द करने को कहा, और हाँ, मैंने आपके साथ आए उस बच्चे को देखा था, बल्कि बच्चों की पूरी फौज देखी थी, भगवान बचाए मुझे! और आप,” बटुक काका की तरफ मुड़कर उसने कहा, “आप लोगों के जाने के बाद हमारे भीतर इतनी ताकत ही नहीं बची थी कि हम कुछ और देख-समझ पाते।”

“मुझसे पूछने की बजाय आप टॉयलेट जाकर खुद देख सकते हैं कि वो वहाँ है कि नहीं।” पप्पा को उनकी बेवकूफी का एहसास दिलाते हुए उसने कहा। “नहीं, हमारे पास बटर नान नहीं है। और किस किस्म का ढाबा-मालिक मैडमजी, बहुत ईमानदार और मेहनती किस्म का। इतना ज़्यादा कि उन बच्चों पर नज़र रखने के लिए मैं सीसीटीवी नहीं लगवा सकता जिनके अपने परिवार ने ही उन्हें खो दिया हो।”

इती फुई के नहले पर रंजीत चौधरी ने दहला मार दिया था।

“तुम मुझे इस तरह क्यों देख रही हो?” किट्टू ने मैड से पूछा जो ऐसी दिख रही थी मानो उसने अभी-अभी कोई फ्रेंच डेलिकेसी (पकवान) निगल ली हो।

एक बार माँ और पप्पा मुम्बई में लगी एक फ्रेंच प्रदर्शनी में गए थे। वहाँ वेटर व्यंजनों की प्लेट सब के बीच घुमा रहा था। पप्पा ने भी उसमें से कुछ चखा था। जैसे ही पप्पा ने वो चीज़ मुँह में रखी, वेटर ने बताया कि वो फ्रेंच डेलिकेसी है पर वो ये भूल गया है कि किस जानवर के भीतरी अंगों से बनी है। माँ बताती हैं कि पप्पा न तो उसे निगल पा रहे थे, न ही उगल पा रहे थे, और खिलौने के बन्दर की तरह खड़े रह गए थे। और मैड भी अभी वैसी ही दिख रही थी।

“नहीं, मैं तो बस सोच रही हूँ।”

“क्या सोच रही हो? यही ना कि ये अपंग स्केटबोर्ड पर कैसे चढ़ेगा?”

“न-न-नहीं-नहीं? मैं ऐसा क्यों सोचूँगी?” फिर कुछ रुककर बोली “हाँ तुम ठीक कह रहे हो। मैं यही सोच रही थी।”

“हाँ तो इसमें शर्मिन्दा होने की क्या बात है? हर कोई यही सोचता है कि मैं दूसरे बच्चों की तरह कैसे हो सकता हूँ, लेकिन मैं जानता हूँ कि मैं हो सकता हूँ। अब ज़रा देखो मुझे।”

किट्टू अपनी बैसाखियों को अलग रखकर स्केटबोर्ड के बगल में ज़मीन पर बैठ गया। उसने खुद को धीरे-से थोड़ा उठाया और स्केटबोर्ड पर बैठ गया। उसे अपने को इस तरह से उठाने की आदत थी क्योंकि रोज़ नहाते समय या टॉयलेट जाते समय उसे ऐसा करना ही पड़ता था, इसलिए उसे भरोसा था कि वो यहाँ भी

ऐसा कर सकता था। पर एक फर्क था। बाथरूम या टॉयलेट में चक्के नहीं थे जो यहाँ स्केटबोर्ड में थे, और किट्टू ने जितना सोचा था मामला उससे थोड़ा मुश्किल साबित हुआ।

वो कोशिश करता पर नहीं चढ़ पाता, फिर कोशिश करता, फिर नहीं चढ़ पाता। मैड बहुत आश्चर्य से उसे देखती रही। आखिरकार वो स्केटबोर्ड पर बैठ ही गया। इसके बाद उसने सावधानी से अपना दायाँ पैर मोड़ लिया और आधे वाले पैर को उस पर रख लिया। फिर वो मैड की तरफ मुड़ा और मुस्कराया। इसके बाद उसने अपने हाथों के सहारे खुद को धक्का दिया और सर्रर्रर से आगे बढ़ गया।

जारी...

कहीं तुम फफूँद तो नहीं खा रहे

तुमने देखा होगा कि अकसर फल, ब्रेड या खाने की चीज़ों पर कुछ दिनों बाद फफूँद लगने लगती है, खासकर बारिश के मौसम में। यदि फफूँद खाने पर बहुत फैली ना हो तो कई लोग फफूँद लगा हिस्सा हटाकर बाकी का हिस्सा खा लेते हैं। यदि तुम भी ऐसा करते हो तो एक बार फिर सोचना कि हटाने के बावजूद भी कहीं तुम फफूँद तो नहीं खा रहे।

दरअसल खाने की चीज़ों पर दिखाई देने वाली हरी-सफेद मखमली फफूँद तो उसके बीजाणु भर होते हैं। ये फफूँद को फैलाने का काम करते हैं। फफूँद का बाकी हिस्सा खाने की उस चीज़ में काफी अन्दर तक धँसा रहता है और दिखाई नहीं देता। इसे कवकजाल या मायसेलियम कहते हैं और फफूँद का ज़्यादातर हिस्सा यही होता है। फफूँद हटाते वक्त लोग इसका दिखाई देने वाला हिस्सा यानी कि बीजाणु हटाते हैं, जबकि फफूँद का बाकी हिस्सा तो खाने में ही रह जाता है।

वैसे तो अधिकतर फफूँदों को खाने से कोई नुकसान नहीं होता। लेकिन कुछ फफूँद खतरनाक होती हैं। जैसे कुछ फफूँदों में कवकविष (फफूँद द्वारा बनाया गया टॉक्सिन) मौजूद होता है, जो काफी ज़हरीला होता है। शरीर में पहुँचने पर यह एलर्जी पैदा कर सकता है या श्वसन तंत्र को प्रभावित कर सकता है, यानी कि तुम्हें साँस लेने में तकलीफ हो सकती है। खासतौर से एस्परजिलस फफूँद का विष (एफ्लॉटॉक्सिन) कैंसर का कारण बन सकता है। कवकविष प्रमुख रूप से अनाजों और मेवे पर लगने वाली फफूँद में पाया जाता है, लेकिन अंगूर के रस, अजवाइन, सेब और खाने की कुछ अन्य चीज़ों पर पनपने वाली फफूँद में भी यह हो सकता है। इसके अलावा घातक एफ्लॉटॉक्सिन अकसर मक्का और मूँगफली की फसलों में पनपने वाली फफूँद में भी पाया जाता है।

स्रोत फीचर्स से साभार

मेरी उम्मीद की वजह

रुद्राशीष चक्रवर्ती

इस जुलाई का दूसरा रविवार मेरे लिए हमेशा खास रहेगा। तुम पूछोगे, क्यों! वह इसलिए, क्योंकि मैं पूरे दस साल बाद स्विट्ज़रलैंड के रॉजर फेडरर को विम्बलडन का फाइनल खेलते देख रहा था। विम्बलडन दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित टेनिस प्रतियोगिता है और फेडरर दुनिया के सबसे मशहूर टेनिस खिलाड़ियों में से एक। 2009 में, फेडरर ने अमरीका के एंडी रॉडिक को हराकर अपना छठवां विम्बलडन जीता था। फेडरर विम्बल्डन प्रतियोगिता के 143 साल के इतिहास में ऐसा करने वाले दूसरे पुरुष थे। यह एक आसान जीत नहीं थी - पूरा मैच 4 घण्टे और 17 मिनिट तक चला था।

इन दस सालों में फेडरर चार मर्तबा विम्बलडन के फाइनल में पहुँचे थे और दो बार जीते भी थे। 2017 की जीत के साथ वो विम्बलडन को आठ बार जीतने वाले पहले पुरुष खिलाड़ी भी बन गए थे। लेकिन 2009 के बाद किसी न किसी वजह से मैं इन मुकाबलों को नहीं देख पाया था।

इस बार मुझे लंदन के सेंटर कोर्ट पर हो रहे इस मुकाबले को लाइव देखने का मौका मिल गया। सेंटर कोर्ट दुनिया का सबसे मशहूर टेनिस कोर्ट है। दरअसल इस मैच के तीन दिन पहले ही मैं अपनी खास दोस्त के घर पटना पहुँचा था। वहीं मुझे पता चला कि फेडरर सेमीफाइनल में अपने चिर प्रतिद्वन्द्वी राफेल नडाल को हराकर बारहवीं बार विम्बलडन के फाइनल में पहुँच गए हैं।

नडाल पर इस जीत का खास महत्व इसलिए था, क्योंकि 2008 के फाइनल मुकाबले के बाद ये दोनों महारथी विम्बलडन में पहली बार एक-दूसरे से भिड़ रहे थे। ग्यारह साल पहले हुए इस मैच को दुनिया भर के टेनिस प्रेमी टेनिस इतिहास का महानतम मैच मानते हैं। यह विम्बलडन का तब तक का सबसे लम्बा फाइनल था। 4 घण्टे और 48 मिनिट तक चले इस मैच को जीतकर नडाल ने अपना पहला विम्बलडन खिताब जीता था। फेडरर तब तक पाँच विम्बलडन जीत चुके थे।

पटना पहुँचकर मुझे यह भी पता चला कि फाइनल में फेडरर का मुकाबला दुनिया के नम्बर एक खिलाड़ी नोवाक जोकोविच से होगा। उन्होंने फेडरर को लगातार दो साल विम्बलडन फाइनल में हराया था। नडाल के अलावा जोकोविच अकेले ऐसे शख्स हैं, जो फेडरर को विम्बलडन फाइनल में हरा चुके थे।

एक शानदार मैच

खैर, मैच शुरू हुआ। जोकोविच ने पहले तीन में से दो सैट जीतकर बढ़त बना ली। फेडरर खुद को मैच में बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे थे। मैं फेडरर को पिछड़ता देख वैसे ही नर्वस हो रहा था, जैसे दस साल पहले होता था। मुझे लगा कि अब उनके पास इस मैच में वापस लौटने का कोई मौका नहीं है और मैच चौथे सैट में ही खत्म हो जाएगा। लेकिन फेडरर ने वापसी की और न सिर्फ चौथा सैट जीता, बल्कि पाँचवें सैट में विम्बलडन को नौवीं बार जीतने के बिलकुल करीब भी आ गए थे।

पर आखिर में, जोकोविच फेडरर को हराने में कामयाब रहे। यह मैच 4 घण्टे और 55 मिनिट तक चला। और 2008 के फाइनल का रिकार्ड तोड़ते हुए विम्बलडन इतिहास का सबसे लम्बा फाइनल बन गया। जोकोविच ने दो घण्टे से भी ज़्यादा चले पाँचवें सैट में दो चैंपियनशिप पाइंट बचाकर यह जीत हासिल की थी।

मेरी उम्मीद की वजह क्यों?

उस रात मेरे दिमाग में बार-बार एक ही बात चल रही थी कि आखिर वह क्या चीज़ है, जो मुझे स्विट्ज़रलैंड के इस महानतम खिलाड़ी की तरफ खींचती है? धरती के दूसरे सिरे पर रह रहे मुझ जैसे साधारण आदमी के लिए फेडरर के दो दशकों से भी ज़्यादा लम्बे और असाधारण टेनिस सफर की क्या अहमियत है? मुझे एहसास हुआ कि इसका सम्बन्ध दरअसल फेडरर के भीतर की किसी अनोखी बात से था ही नहीं, बल्कि इससे था कि फेडरर को खेलते देखकर मैं अपने व्यक्तिगत जीवन में उससे क्या गहरी दृष्टि हासिल कर रहा था।

हमारा रोल मॉडल कोई भी हो सकता है – हमारे माता-पिता, कोई फिल्मस्टार, कोई राजनेता, कोई ऐतिहासिक हस्ती या किसी उपन्यास या कहानी का कोई किरदार। उनकी जो भी बात हमें अच्छी लगती है उसके दो पहलू होते हैं। एक तरफ तो हमें उनके भीतर भी हमारे-तुम्हारे व्यक्तित्व की कुछ बुनियादी बातें दिखाई देती हैं। दूसरी तरफ उन्हें देखकर हमारे भीतर यह भरोसा जागता है कि हम अपने व्यक्तित्व का कुछ विस्तार कर सकते हैं। अपने चरित्र में कुछ ऐसी मूल्यवान बात जोड़ सकते हैं जिससे हम खुद दूसरों के लिए उम्मीद की वजह बन जाएँ। ठीक वैसे ही, जैसे ये लोग हमारे लिए उम्मीद की वजह होते हैं।

उम्मीद हमें किसी भी रूप में मिल सकती है, और वह कहीं न कहीं होती ज़रूर है। जब कोई व्यक्ति साल दर साल पूरी शिद्दत से किसी काम को करता जाता है, तो उसे देखकर हमें यह ताकत मिलती है कि अनिश्चितता भरी इस ज़िन्दगी में समाज के चकों तले सारी अच्छी चीज़ें कुचला नहीं जाएँगी। यह वैसा ही है कि मौसमों में बदलाव के साथ आसमान के तारों की स्थिति कितनी ही क्यों न बदल जाए, ध्रुव तारा हमेशा अपनी जगह बना रहता है। और ढिठाई के साथ उत्तरी ध्रुव की ओर इशारा करता रहता है।

निरन्तर बदलती परिस्थितियों में, जिसने थोड़ा-बहुत मुझे भी बदला है, शायद फेडरर मेरे लिए और दुनिया भर में मुझ जैसे करोड़ों लोगों के लिए वही भरोसेमन्द ध्रुव तारा बन गए थे। यह तारा हर समय इस बात की ओर इशारा करता रहता है कि परिस्थितियाँ कुछ भी हों, हम अपने काम को पूरी शिद्दत से करते रहें। यही कारण था कि इतने सालों से मैं अपनी आशाएँ फेडरर पर टिकाए रहा।

किसी दूसरे व्यक्ति के लिए उम्मीद की वजह बनना – वह भी दस सालों के फासले के बाद, जिस दरमियान आप दोनों के भीतर बहुत बदलाव आ चुका हो – कितनी खूबसूरत बात है न यह?

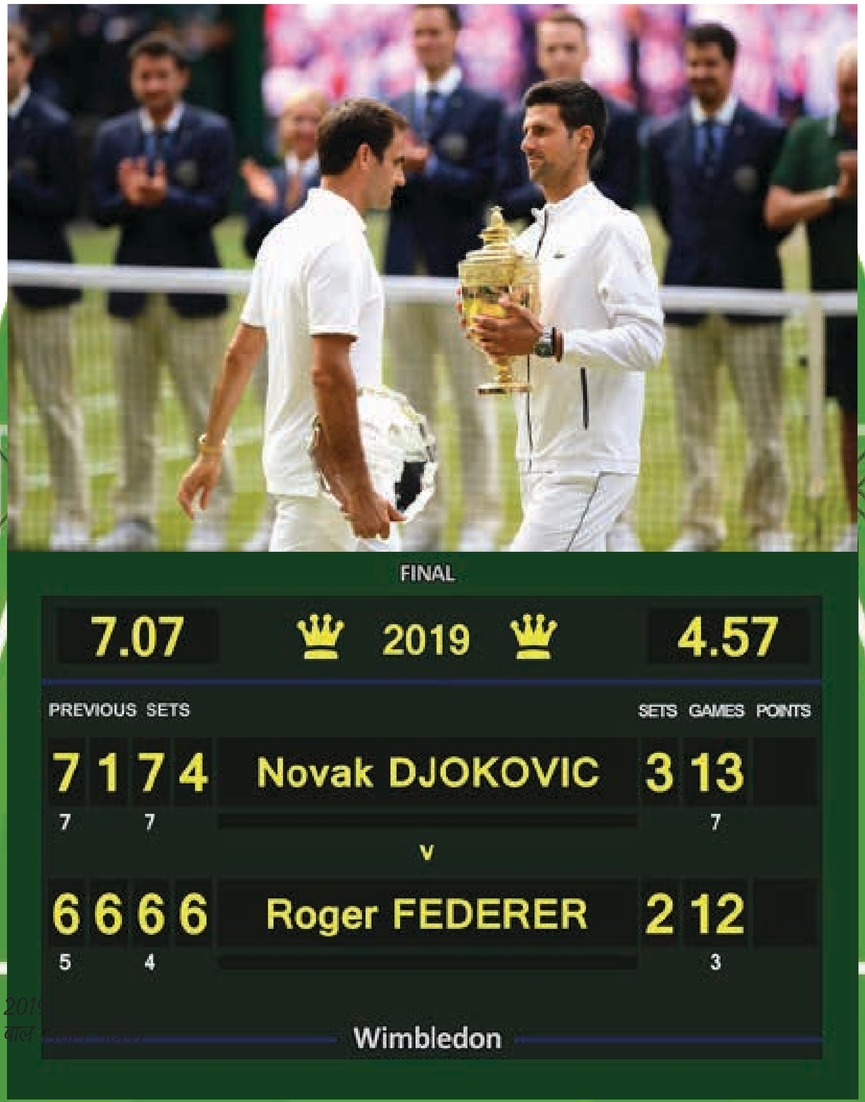

अनुवाद – भरत त्रिपाठी
डिज़ाइन: इशिता देबनाथ बिस्वास

रोहन चक्रवर्ती

एक दिन का फूल

जानते हो एक ऐसा फूल है जिसे ना केवल तुम खा सकते हो, बल्कि उससे अपने जूते भी पॉलिश कर सकते हो। चलो, आज तुम्हारी मुलाकात 'शू फ्लॉवर' यानी गुड़हल (हाइबिस्कस) से करवाते हैं। खिलने के बाद गुड़हल का फूल केवल एक दिन के लिए तुम्हारे बगीचे या आसपास की शोभा बढ़ाता है। सूर्यास्त होने के साथ ही गुड़हल के फूल मुरझा जाते हैं और पेड़ से गिर जाते हैं।

गुड़हल की 200 से भी ज़्यादा किस्में पाई जाती हैं। इसकी बड़े-बड़े फूलों वाली, जो किस्म हम आमतौर पर बगीचों में देखते हैं, चाइनीज़ रोज़ कहलाती है।

मुझे ऐसे फूल अच्छे लगते हैं
जो दिन-रात खिले हुए न रहें
शाम होने पर थक जाएँ और उनींदे होने लगें
रात में अपने को समेट लें सोने चले जाएँ
आखिर दिन-रात मुस्कराते रहना कोई अच्छी बात नहीं
गुड़हल ऐसा ही फूल है

मंगलेश डबराल (‘गुड़हल’ कविता से कुछ पंक्तियाँ)

nature conservation foundation
science for conservation

गुड़हल का फूल

फील्ड डायरी के लिए

अपने आसपास गुड़हल का एक ऐसा पौधा खोजो जिसमें फूल खिले हों। हो सकता है ऐसा पौधा तुम्हारे बगीचे या पास-पड़ोस में ही हो। मापने वाली एक टेप और एक आवर्धक शीशा (मैग्नीफाइंग ग्लास) लेकर सूर्योदय के समय पौधे के पास जाओ। यदि तुम थोड़ा जल्दी पहुँच जाओ तो सूरज निकलने के साथ ही अपनी आँखों के सामने इस फूल को खिलते हुए देख सकते हो।

- तुम्हारा गुड़हल का पौधा कितना बड़ा है?
- उसकी पत्तियों को देखो। उनकी आकृति कैसी है? अपनी डायरी में उनका चित्र बनाओ।
- उसमें कितने फूल खिले हैं? उनमें से कैसी गन्ध आती है?
- क्या तुमने फूल में से निकलती एक लम्बी, मोटी डण्डी (नूडल) देखी? उसके अगल-बगल छोटे-छोटे पीले बल्ब जैसे होते हैं और उसके छोर पर छोटे मखमली पैड होते हैं। यह पीले बल्ब परागकण (पोलेन) होते हैं। मैग्नीफाइंग ग्लास का उपयोग करके देखो क्या तुम्हें लाल मखमली पैड पर कोई परागकण नज़र आते हैं?
- पंखुड़ियों से बनी नली की लम्बाई नोट करो। इस नली के अन्त में फूल का मकरन्द (नेक्टर) होता है। इस मकरन्द तक पहुँचने के लिए किसी कीट की जीभ या चिड़िया की चोंच को कितना लम्बा होना पड़ेगा? अपने मापने वाली टेप का इस्तेमाल करो और सभी माप अपनी डायरी में दर्ज करते जाओ। यदि कोई भी कीट या चिड़िया नली के अन्त तक नहीं पहुँच पाए तो क्या होगा? क्या इस मीठे मकरन्द को पाने का कोई और तरीका भी हो सकता है?
- इसके फल ढूँढो। क्या हुआ, नहीं मिले? सिर्फ तुम ही नहीं, बहुत से लोगों ने, यहाँ तक कि वनस्पति शास्त्रियों ने भी गुड़हल के फल नहीं देखे हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि किसी पेड़ में फूल तो हों लेकिन उन फूलों से कोई फल न बनता हो?

फील्ड डायरी के अपने नोट्स और चित्र हमें भेजो। यदि तुमने गुड़हल के पौधे पर किन्हीं कीटों या चिड़ियों को आते देखा हो तो हमें ज़रूर बताना।

ताज़गी से भरपूर गुड़हल की चाय का प्याला

हज़ारों साल पहले मिस्र के फैरो (सम्राट) गुड़हल की चाय पिया करते थे। आज भी यह मिस्र में शादियों में बनने वाला एक आम पेय है। तुम भी आज़मा सकते हो कि गुड़हल की चाय का स्वाद कैसा होता है। इसे बनाना काफी आसान है।

- जिस गुड़हल के पेड़ को खोजा है उससे झड़े कुछ ताज़े फूल एकत्र करो। ध्यान रखना कि उनके ऊपर किसी तरह के कीटनाशक का छिड़काव नहीं किया गया हो। पंखुड़ियों के नीचे हरा भाग (सेपल), बीच के पीले बल्ब, मखमली पैड और डंठल को हटा दो।
- पंखुड़ियों को अच्छी तरह से धो लो। 1 कप पंखुड़ियों में 4-5 कप खौलता पानी डालो। इस मिश्रण को ढँककर रख दो और पंखुड़ियों को 4-5 मिनट तक पानी में डूबे रहने दो। गुड़हल के फूल रंगने (डाइ) के काम भी आते हैं। इसलिए ज़रा बचके रहना, कहीं तुम्हारे कपड़ों में दाग न लग जाए।
- एक महीन छन्नी से इसे छान लो और अपने स्वाद अनुसार चीनी मिला लो। कुछ लोग स्वाद के लिए इसमें नींबू की फाँक, पुदीना या सन्तरे के छिलके भी डालते हैं।
- चाहो तो तुम गुड़हल के पंखुड़ियों को अच्छी तरह धूप में सुखाकर रख सकते हो ताकि बाद में इन्हें इस्तेमाल कर सको।

प्रतियोगिता

घर के किसी बड़े व्यक्ति से पूछो कि तुम्हारी भाषा में गुड़हल को क्या कहते हैं। उनसे गुड़हल के अलग-अलग उपयोगों के बारे में भी पूछो। अपने दोस्तों व पड़ोसियों से भी पूछो कि उनकी भाषा में गुड़हल को क्या कहा जाता है। नामों की यह सूची (जितनी लम्बी हो, उतना अच्छा), अपने चित्र और फील्ड डायरी के नोट्स हमें chakmak@eklavya.in पर भेजो और एक किताब जीतने का मौका पाओ।

चूँ चूँ करती आई... गतिविधि में गौरैया के बारे में मान्यताएँ भेजकर अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मण्डला, राजस्थान की शिल्पा और सिमरन ने प्रतियोगिता जीती है। चकमक की तरफ से इनको बतौर ईनाम किताबें मिलेंगी।

अनुवाद: कविता तिवारी

क्यों-क्यों?

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था कि जब कहीं बिजली गिरती है तो बड़ी ज़ोर की आवाज़ होती है। यह आवाज़ क्यों होती है? चौथी से बारहवीं तक के बच्चों ने हमें अपने रोचक जवाब भेजे हैं। उनमें से कुछ हम यहाँ दे रहे हैं। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

बिजली अभी उड़ रही है। जब वो पहाड़ से टकराती है तब बड़ी ज़ोर की आवाज़ होती है।

त्रिलोक, तीसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

चित्र: हर्षिता, छठवीं, अपना तालीम घर, दिलकुशा, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

बिजली गिरने पर आवाज़ इसलिए आती है क्योंकि लोगों का मानना है कि दो बादलों के बीच में झगड़ा होता है और वे आपस में टकराते हैं तो उनमें गर्जाहट होती है। उनकी गर्जाहट के कारण बिजली गिरती है, तो उस गुस्से के कारण बिजली गिरते समय आवाज़ करती है।

हर्षिता कोशले, नौवीं, केन्द्रीय विद्यालय, देवास, मध्य प्रदेश

यह बिलकुल उस तरह है जैसे एक गरम बरतन पर ठण्डा पानी डालने से ऊर्जा निकलती है और आवाज़ भी आती है।

नेहा कुमारी, पाँचवीं, अपना स्कूल, पौरा नवादा, बिहार

बादल आपस में लड़ते हैं। बादलों के पास पत्थर होते हैं। उनके टकराने की आवाज़ होती है।

मृगांक चमोली, दूसरी, केन्द्रीय विद्यालय, पौड़ी, उत्तराखण्ड

बादल लड़ते हैं तो पानी बरसता है, बिजली चमकती है, और मेंढक निकलते हैं और साँप निकलते हैं।

मुकेश कुमार, तीसरी, पहाड़गंज प्राथमिक विद्यालय, घोसियाना, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

बिजली कड़कती है क्योंकि दो बादल आमने-सामने आ जाते हैं और एक-दूसरे से टकरा जाते हैं। हो सकता है कि एक बादल दूसरे के रास्ते में आ जाता हो। जब वो आपस में टकराते हैं तो ज़ोर की आवाज़ करते हैं। और इसीलिए हमें भी ज़ोर की आवाज़ सुनाई देती है।

सौरभ सरकार, पाँचवीं, मिलनपुर एल पी स्कूल, आसाम

जैसे टॉम एण्ड जैरी पकड़म-पकड़ाई खेलते हैं वैसे ही बादल भी पकड़म-पकड़ाई खेलते हैं। जब एक बादल दूसरे बादल को पकड़ता है तो बड़ी आवाज़ होती है और बिजली बनती है। और जब यह बिजली नीचे गिरती है तो रोने लगती है। इस कारण ज़ोर की आवाज़ होती है।

रुचिता हेमन्त घनवट, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

आवाज़ इसलिए होती है क्योंकि जब कोई दो वस्तु आपस में टकराती हैं तो आवाज़ होती है। इस पर सवाल उठता है कि जब दो लोग आपस में टकराते हैं तो आवाज़ क्यों नहीं होती?

रागिनी, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

जब भगवान गुस्सा हो जाते हैं तो बारिश के साथ-साथ बिजली कड़कती है। और जब सियार की शादी होने लगती है तभी भी बारिश होती है।

अज़रा, चौथी, अपना तालीम घर, दिलकुशा, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

आवाज़ आती है क्योंकि बिजली को बादल के ऊपर अपना नाम लिखना होता है, पर बादल बिजली को धकेलता है। इससे बिजली रोती है। उसके रोने की आवाज़ आती है। और बिजली बहुत खाती है तो उसकी बहुत ज़ोर की आवाज़ आती है डकार की।

साया संजय सालवे, छठवीं, कमला निम्बकर बाल भवन, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

बादलों में पानी होता है। पानी में लाखों कण होते हैं। ये कण भी बादलों में जमा होते हैं। ये जब बादलों को भर देते हैं तो धक्का-मुक्की के बाद ये लड़ते हैं। फिर रगड़ होती है। तब आवाज़ होती है।

अनुभव चमोली, चौथी, केन्द्रीय विद्यालय, पौड़ी, उत्तराखण्ड

बिजली वैज्ञानिकों के कारण चमकती है। और बिजली पानी गिरने के कारण चमकती है।

शिवानी जाटव, आठवीं, रीडिंग रूम बगरोदा, भोपाल, मध्य प्रदेश

यह बिजली सन्देश देने के लिए गिरती है। कोई अगर सामान ले जा रहा है और बारिश हो जाए तो वह भीग जाएगा। इसलिए धरती पर बिजली गिरती है।

योमगिरी गोस्वामी, तीसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

बादलों को जब सर्दी होती है तो बारिश होती है। और जब बादल छींकते हैं तब बिजली बड़े ज़ोर-से ज़मीन की ओर आती है और ज़मीन से टकराती है। इसीलिए जब बिजली गिरती है तो बड़ी आवाज़ होती है।

शिफा अमित ताम्बोली, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

बिजली गिरने पर आवाज़ इसलिए आती है, क्योंकि बादल का पेट खराब होता है इसलिए वह गिरते ही बजता है।

राजवीर चौहान, छठवीं, केरला पब्लिक स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

मुझे तो लगता है कि हमारे ऊपर जब कोई चीज़ गिरती है तो हमें कैसे एकदम ज़ोर-से चिल्लाते हैं। उसी तरह जब पेड़ पर बिजली गिरती है तो वह भी ज़ोर से चिल्लाता होगा और उसी की आवाज़ होती है।

मनस्वी धनंजय, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

शायद किसी प्राकृतिक घटना ने इतना डर, रोमांच और आश्चर्य पैदा नहीं किया होगा जितना बिजली के चमकने और बादल के गरजने से होता है। ग्रीक और रोमनवासी इसे ज्यूपिटर का प्रहार मानते हैं। जब बादलों के बीच घर्षण व टकराव होता है तो तब उनकी ऊर्जा किसी दूसरी ऊर्जा से जुड़कर आपस में टकराती है जिससे हमें ज़ोर की आवाज़ सुनाई पड़ती है। यह तीस हज़ार डिग्री सेंटीग्रेड तक गर्म होती है।

दुर्गेश्वरी सिन्हा, नौवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

वैसे तो हम सब पहले यही सोचते थे कि बिजली और बिजली की आवाज़ आकाश से होती है और यहाँ तक आती है। पहले ये सोचते थे कि यह आवाज़ भगवान करते हैं पर ऐसा बिलकुल नहीं है। इट्स रॉन्ग थिंकिंग।

होता ये है कि हमारे आकाश के बड़े-बड़े बादल जब आपस में बहुत तेज़ी-से लड़ते हैं तब यह आवाज़ आती है। और आपको पता ही होगा कि जब कोई भी चीज़ बहुत तेज़ी-से लड़ती है तब चिंगारी निकलती है। वैसे ही बादल भी तो चीज़ ही है। तभी जब वो आपस में तेज़ी-से लड़ते हैं तो आवाज़ आती है और चिंगारी भी निकलती है।

हर्षिता, छठवीं, अपना तालीम घर, दिलकुशा, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

क्यों-क्यों?

आवाज़ इसलिए आती है कि वह बताती है कि बारिश आने वाली है।

रोहन, तेरह साल, मंज़िल संस्था, दिल्ली

••••••••••

क्योंकि उसमें आग और पत्थर लगे रहते हैं। और जब वह गिरती है तो आवाज़ करती है। और किसी भी जगह गिर सकती है। और पत्थर जैसी दिखती है, पर पत्थर नहीं होता है। बिजली होती है।

झरना, तीसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

••••••••••

मेरे ख्याल से बिजली चमकती है, जब भगवान जी सो कर उठते हैं और उन्हें खाली होने जाना रहता है। यह रोशनी टॉयलेट के बल्ब की है और उसके थोड़ी देर बाद आने वाली आवाज़ उनके पेट की। फिर जब वो फ्लश करते हैं तो बारिश होती है और सब उसी बारिश में नहाना पसन्द करते हैं, पता नहीं क्यों? इससे तो हमारे ताजमहल चाचा की भी हालत खराब है। बेचारे जॉन्डिस के मारे पीले पड़ गए हैं।

सृजन कुमार, नौवीं, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

••••••••••

आवाज़ इसलिए होती है क्योंकि आकाश में एलियन गाड़ी चलाते हैं। वो गिरते ही बिजली बादल से निकल आती है। मुझे ऐसा लगता है कि गाड़ी खराब होगी। हमेशा बन्द हो जाती है। मैंने तो सुना है कि बिजली से एक तालाब भी बना है।

अथर्व नवनाथ क्षिरसागर, नौवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

••••••••••

बिजली गिरने पर आवाज़ इसलिए आती है क्योंकि बिजली साउण्ड वैक्स के साथ नीचे आती है। जब दो बादल एक-दूसरे से टकराते हैं तो उनके भारी वज़न के कारण बिजली कड़कती है।

रुद्रा गंगराडे, सातवीं, सेंट थॉमस अकादमी, देवास, मध्य प्रदेश

••••••••••

यह आवाज़ इसलिए होती है कि क्या पता भगवान हमसे बदला लेना चाहते हों। बिजली ऊपर से गिरती है और मैंने सुना है कि भगवान भी ऊपर ही रहते हैं। तो भगवान हमें डराने के लिए यह आवाज़ करते होंगे या फिर क्या पता भगवान मज़ाक करते होंगे। वह हर बात को मज़ाक समझकर ये सब करते हों।

सिमरन साहू, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

••••••••••

चूँकि बिजली पूरे आसमान को चीरते हुए आती है इसलिए जब बिजली गिरती है तो आवाज़ आती है। और बिजली में आग होती है। जैसे जब कढ़ाही में तेल गरम हो रहा हो और उसमें पानी के छींटे पड़ जाएँ तो तेल में किस तरह आवाज़ आती है। या फिर यह भी हो सकता है कि ज़मीन पर गिरते समय बिजली का सन्तुलन बिगड़ जाए। इस कारण से आवाज़ आती हो।

अमित चौहान, छठवीं, स्वतंत्र तालीम, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

••••••••••

मेरी फ्रैंड बोलती है कि जब बिजली अपनी बेटी को डाँटती है तो बहुत ज़ोर की आवाज़ आती है। जैसे हमारी मम्मी हमको डाँटती हैं तो इतनी ज़ोर की आवाज़ होती है कि सब डर जाते हैं। बिजली के डाँटने से भी सब डर जाते हैं।

आरज़ू बारसे, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

••••••••••

एक दिन मैं बारिश में भीग रही थी तब अचानक से एक ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। उस आवाज़ से घबराकर मैं चीख पड़ी, " आ .... आ .. आ..... आई .... देखो मेरे पीछे बिजली पड़ी है। " मैं घर के अन्दर गई, तब मेरी आई फर्श पर पोंछा लगा रही थी, और न... मैं फर्श पर फिसलकर गिर गई। फिर मैं उठकर खड़ी हो गई और अपने कमरे में चली गई। वहाँ मेरी बड़ी बहन केला खा रही थी। केला खाने के बाद उसने छिलका ज़मीन पर फेंका और भागते-भागते मेरा पैर उस पर पड़ने से मैं फिर से फिसल गई। मेरी बड़ी बहन मुझ पर हँस रही थी। फिर मैंने मेरी आई से पूछा, कि ऐसा क्यों होता है? पहले तो वे कुछ समझीं ही नहीं। उन्होंने पूछा, "क्या?" फिर मैंने उनको पूछा कि "बिजली इतनी ज़ोर-से क्यों कड़कती है?" उन्होंने कहा, "जब बादल एक-दूसरे से टकरा जाते हैं, तब इतनी बड़ी आवाज़ होती है।" मेरी बड़ी बहन ने कहा, "अरे, तुम्हें इतना भी नहीं पता?" फिर हम तीनों हँसने लगे। मैंने फिर आई से वही सवाल पूछा। उन्होंने कहा कि जब बादल एक-दूसरे से झगड़ते हैं, उसके कारण ये बड़ी आवाज़ होती है।

समृद्धि महेश पटवर्धन, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

क्यों-क्यों? हमारा जवाब

हर बार जब बिजली गिरती है, वह कड़कती है और बादल गरजते हैं। लेकिन बिजली के साथ कड़कने-गरजने की आवाज़ें हमें हमेशा सुनाई नहीं देती हैं। कभी-कभी बिजली बहुत दूर गिरती है और वह दिख तो जाती है लेकिन उसके साथ हो रही आवाज़ें हम तक पहुँचती नहीं। कभी-कभी कड़कने-गरजने की आवाज़ें तो हमें डरा देती हैं, लेकिन बादलों के कारण हमें बिजली दिखती नहीं।

बिजली के साथ कड़कने की आवाज़, बादल के गरजने की आवाज़ क्यों सुनाई देती हैं इसके बारे में लोगों ने काफी विचार किया है। माना जाता है कि बादल में ऋणात्मक आवेश बादल की निचले हिस्से की तरफ और छोटे धनात्मक आवेश ऊपर की ओर जमा हो जाते हैं। अब बादल को हम एक बैटरी की तरह सोच सकते हैं यानी कि बादल के ऊपरी और नीचे के हिस्सों को हम बैटरी के दो टर्मिनल की तरह सोच सकते हैं। इस स्थिति में होता क्या है - एक से दूसरे टर्मिनल के बीच करंट या बिजली बहती है। ये बिजली एक बादल के दो हिस्सों के बीच, एक बादल के ऋणात्मक हिस्से से दूसरे के धनात्मक की तरफ या फिर बादल और धरती के बीच बह सकती है।

चूँकि हवा बिजली की अच्छी चालक नहीं है, इसलिए जब आवेश की मात्रा काफी ज़्यादा हो जाती है तब ही बादलों के बीच या फिर बादल और धरती के बीच बिजली बहती है। जब यह बिजली बहती है तो आसपास की हवा का तापमान 30,000 डिग्री सेल्शियस तक हो जाता है। हवा का दबाव खूब बढ़ जाता है और वह अचानक फैलती है। आवाज़ इसी फैलाव की वजह से आती है। जैसे कार का टायर फटता है तो आवाज़ आती है, वैसे ही।

बुन्देलखण्डी लोककथा

चन्दा और डुकरिया

प्रस्तुति: मनोज साहू 'निडर'
चित्र: प्रशान्त सोनी

बऊ की मुंडी सन्ना गई। बऊ खूब गुस्सा भई और चंदा के ऊपरे बुहारी लेके पिल पड़ी और दस – बीस बुहारी जड़ दई।

बात भोत पुरानी है। एक डुकरिया थी। बा अकेली टपरिया में रहत थी। उन दिनन में जो आसमान खूबई नीचो थो। बदरा मूण्ड (सिर) के ऊपरे से ऊड़त रहत थे और जे चन्दा तारे आदमियों की मुण्डी से टकरा जात थे। सूरज भी नीचे तपत रहत थो, ते के मारे लोग-बाग दुफैरिया में घर से बाहर नई चिंगत थे। रात के गांव के मौड़ा-मौड़ी कभी बदरा पे बैठ के घूमन चले जावे तो कभी चन्दा मामा के घर मिजवानी करन लगे।

डुकरिया बउ भोत परेशान रहत थी, बा जब भी बुहारी (झाड़ू) फेरबे के लाने घर से बहार निकरे तो कभू कहीं के तारे से टकरा के खुपड़िया फोर ले तो कभू बुहारी ऊपर करे तो बुहारी चन्दा के लंग जाय। बउ मनई मन में खूब बड़बड़ान लगे और आसमान खो गारी बकन लगे। एक दिना का अओ बरसात के दिना थे। मौड़ा-मौड़ी बदरा पै बैठ के इतै-उतै फिर रये थे। फिरत-फिरत वे डुकरिया की टपरिया के ऊपरे आ गये। डुकरिया आंगन में बुहारी फेर रई थी। मौड़ा-मौड़ी बऊ हे खिज़ान लगे, वा बुहारी लेके उनके पीछे दौड़न लगी और चन्दा से टकरा गई। बऊ की मुण्डी सन्ना गई। बऊ खूब गुस्सा भई और चन्दा के ऊपरे बुहारी लेके पिल पड़ी और दस-बीस बुहारी जड़ दई।

जा बात आसमान खों अखर गई। वो भी डुकरिया से रूस के ऊपर उठन लगो और ऊपर उठत ई गओ। जा देख के डुकरिया भोतई दुखी हो गई और बादल खों रोकन लगी। डुकरिया बुहारी के संग चन्दा से चिपक गई और संग-संग खूब दूर आकाश में पोंच गई।

ऐसी मान्यता है कि बई डुकरिया आज भी चन्दा पे जा के रई है, बा की छैया धरती से आज भी दिखाई दे रई है।

क्या होता है साबूदाना

सजिता नायर

माना जाता है की टैपिओका को 1943-44 के बीच में दक्षिण अमेरिका से सबसे पहले तमिलनाडु के सेलम में लाया गया। शायद इसीलिए आज भी टैपिओका का सबसे बड़ा उत्पादक तमिलनाडु ही है। तमिलनाडु और केरल में इसे उबालकर मछली के साथ खाया जाता है। इसे पतला काटकर इसके चिप्स भी बनाए जाते हैं। पूर्वोत्तर भारत के कई इलाकों में भी टैपिओका को खाने में इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन इससे बनने वाला साबूदाना सबसे ज़्यादा मध्य और उत्तर भारत में लोकप्रिय है।

खिचड़ी, कटलेट, खीर या फिर पापड़। किसी न किसी रूप में साबूदाने को भारत में पसन्द किया जाता है। पर, दिलचस्प बात यह है कि इतना पसन्द की जाने वाली इस चीज़ के बारे में हम बहुत कम जानते हैं। यहाँ तक कि हममें से कई लोगों को यह भी नहीं पता कि साबूदाना किससे और कैसे बनता है। तो चलो, क्यों न इन दानों के सफर के बारे में कुछ जानें?

पहले एक बात जान लो कि दुनियाभर में ये दाने दो किस्म के होते हैं। एक का सफर पाम के पेड़ से शुरू होता है। पाम पौधों का वो परिवार है जिसके सदस्य नारियल, खजूर, छींदा, ताड़ हैं। और साबूदाने की दूजी किस्म का सफर शुरू होता है - टैपिओका से। हमारे देश में जो साबूदाना हम खाते हैं, वो बनता है टैपिओका से।

टैपिओका, आलू की तरह ही ज़मीन के नीचे उगता है। यह उस पौधे की जड़ है यानी कि यह एक कंद है। दिखने में यह लगभग शकरकंद जैसा ही होता है। बाहर से भूरा और अन्दर से यह सफेद दिखता है। केरल में कप्पा, तमिलनाडु में मार्विलकेयंग और आन्ध्रप्रदेश जाओ तो इसे करापेंडलम नाम से जाना जाता है। ये ज़्यादातर इन्हीं प्रदेशों में उगाया जाता है। साबूदाने की जितनी भी खिचड़ी और वड़े मध्य और उत्तर भारत में खाए जाते हैं, उसके लिए हम तमिलनाडु के सेलम शहर पर निर्भर हैं। यहाँ पर देश का 90 प्रतिशत साबूदाना बनता है।

साबूदाने के मोती बनते कैसे हैं?

चूँकि टैपिओका कंद है, इसलिए पूरे पौधे को उखाड़कर ही इन्हें इकट्ठा किया जाता है। हालाँकि पौधों के तनों के टुकड़ों को लगाकर भी इनकी अगली फसल तैयार हो सकती है। पौधे से अलग होने के बाद सारे कंद एक ट्रक में भरकर फैक्ट्री में ले जाए जाते हैं। टैपिओका से कुछ भी बनाने से पहले उसका भूरे रंग का छिलका छीला जाता है। साबूदाना बनाने के लिए भी सबसे पहले यह छिलका निकाला जाता है। फिर इन्हें पानी से दो-तीन बार अच्छे से साफ किया जाता है। उसके बाद इन्हें मशीन से अच्छी तरह से पीसा जाता है, ताकि इनका पल्प बन जाए। इस पल्प की फिर छँटाई की जाती है, ताकि उससे स्टार्च व फाइबर अलग हो जाएँ। इस प्रकिया से निकले दूध को बड़ी-बड़ी टंकियों में भरकर सुखाया जाता है, जब तक कि वह पाउडर न बन जाए। ये टंकियाँ काफी अन्दर, प्रदूषण से सुरक्षित ऐसी जगहों में होती हैं जहाँ धूप भी पड़ती हो।

हल्की-सी नमी वाले ये पाउडर के ढल्ले फिर मशीन में जाते हैं। ऐसी मशीन में, जिसमें इन्हें लगातार उचकाया जाता है और ये आगे-पीछे डाँस करते हुए छोटे-बड़े गोलों का रूप ले लेते हैं। और फिर ये पहुँचते हैं एक दूसरी मशीन में जो एक छन्नी की तरह काम करती है। यहाँ इनको बचे-खुचे पाउडर से अलग किया जाता है। आखिर में कुछ लोग मिलकर इनकी थोड़ी और छँटाई करते हैं ताकि लगभग समान आकार के गोलों के ढेर इकट्ठे हो जाएँ। थोड़ा और सुखाने व सफाई के साथ खतम होता है टैपिओका से साबूदाना बनने का सफर। साबूदाने के मोतियों में बदलने के बाद इनका दूसरा सफर शुरू होता है। और यह सफर खतम होता है देश के अलग-अलग कोनों में तुम्हारे-मेरे घरों की कढ़ाहियों में।

शू बॉक्स, एक छोटा गत्ते का टुकड़ा, कैंची, पेपर कटर, पेंसिल या पैन, स्केल, गोंद, टेप

जुगाड़

तुम भी बनाओ

अलमीरा

गत्ते का बॉक्स, गत्ते के कुछ टुकड़े, कैंची, पेपर कटर, पेंसिल या पैन, स्केल, गोंद, टेप

गत्ते का कोई छोटा बॉक्स लो। उसे एक तरफ से खोल दो। नीचे के भाग पर अच्छी तरह से टेप लगा दो।

बॉक्स जिस तरफ से खुला है, वहाँ चार पल्ले हैं। दोनों छोटे पल्लों को काटकर अलग कर दो।

बॉक्स को खड़ा कर दो। नीचे का भाग छोड़ बाकी पूरे बक्से में अपना पसन्दीदा कागज़ चिपका लो।

जो गत्ते तुमने काटकर रख दिए थे, उनके बराबर गत्तों के दो और टुकड़े लो। इन सब पर कागज़ चिपका लो।

इनमें से एक को अलमीरा के तले पर चिपका दो।

बाकी दो से अलमीरा के बीच के रैक बनेंगे। बीच में टिके रहने के लिए या तो इन्हें टेप से दीवारों से चिपका दो। या फिर स्टाइरोफोम के पट्टों को दीवारों से चिपकाकर उन पर रैक टिका सकते हो।

दरवाज़े को खोलने में आसानी हो, इसके लिए चाहो तो तुम एक पतला-सा धागा इसमें लगा सकते हो।

सीक्रेट रैक

एक अलग से गत्ते का टुकड़ा लो। अलमीरा की चौड़ाई के नाप के जितना लम्बा और एक इंच चौड़ा गत्ते का एक पट्टा काट लो।

इस टुकड़े को बाउण्ड्री की तरह नीचे के भाग में बाहर की तरफ चिपका दो। ध्यान रहे कि यह थोड़ा अन्दर की तरफ हो ताकि अलमीरा का दरवाज़ा आराम से बन्द हो सके।

अब गत्तों की टिकिया बनानी हैं। डेढ़ इंच के चौकोर के 4-4 गत्तों के कुछ टुकड़ों को एक के ऊपर एक ऐसे चिपकाओ कि वे एक इंच की मोटाई के हो जाएँ।

इन्हें अलमीरा के तले पर पीछे के दो कोनों में चिपका दो।

रैक के आकार बराबर जो एक गत्ता बचा है, उसे गत्ते की टिकियों पर रख दो। दरवाज़ा बन्द करके देखो। अगर दरवाज़ा अटक रहा है तो जितना भाग बाहर निकल रहा उसे काट दो।

अब यहाँ तुम तुम्हारे पैसे, चॉकलेट जो चाहे छुपाकर रख सकते हो। रैक के ऊपर सामान रख दो तो किसी को पता भी नहीं चलेगा कि तुम्हारा खज़ाना वहीं रखा हुआ है।

इसे और रंगीन बनाने के लिए तुम अलग-अलग स्टीकर या अखबार के रंगीन चित्र काटकर चिपका सकते हो।

हाथी और चींटी

चींटी ने हाथी से
दवा की गोली मँगवाई
लाया तो बोली
हथगोले क्यों ले आया भाई?
चींटी ने हाथी से
कुछ पत्ते मँगवाए
लाया तो बोली भइया
जंगल क्यों उठा लाए?

प्रभात
चित्र: शुभम लखेरा

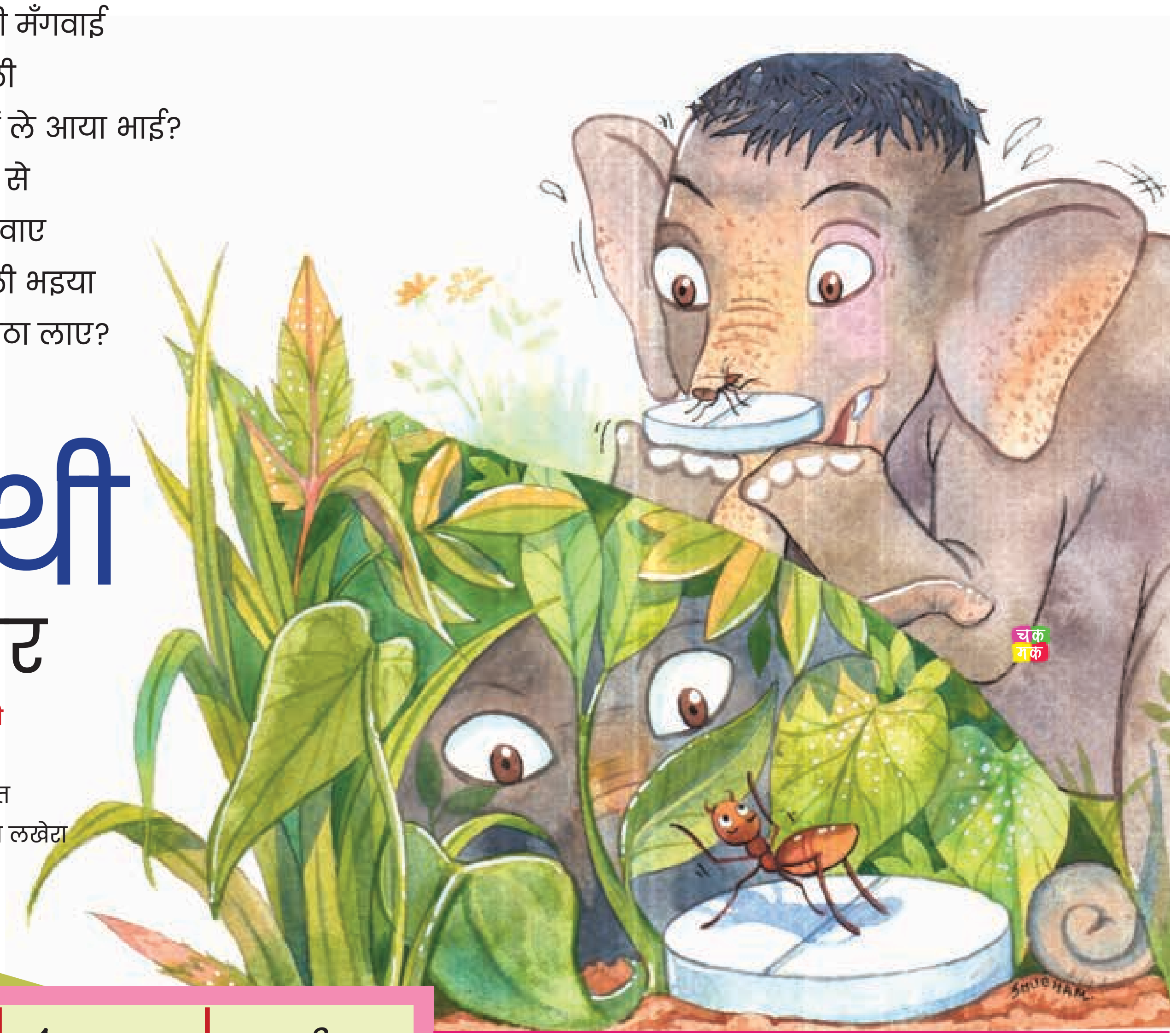

सुडोकू-24

	9		4				8	
	3			5		2		7
7	1				3		6	
9		3	1	8	5	6		4
	6						5	
4		7		2		8		3
	7				6	5	3	
5		6		3			4	
	4		5				2	

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

मेरा पन्ना

इन्दु और अँगनी

भावना दसाणा
पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय सांगोरिया, कुम्भलगढ़ राजसमन्द, राजस्थान

इन्दु नाम की एक लड़की थी। वह सबुह-सुबह आँगन में खेल रही थी। तभी उसकी नज़र एक गिलहरी पर पड़ी। वह बहुत छोटी तथा सुन्दर थी। इन्दु को वह गिलहरी बहुत पसन्द आई। उसने अपने दादाजी से कहा कि इसे हमारे घर में ही रखेंगे। दादाजी मान गए। इन्दु ने गिलहरी का नाम अँगनी रखा क्योंकि वह इन्दु को आँगन में मिली थी। गिलहरी को भी यह नाम पसन्द आया। उसने गिलहरी के लिए बिस्तर बनाया और दोनों सो गए। कल सुबह दादाजी जल्दी उठकर बाज़ार गए। और एक तोहफा इन्दु के लिए लाए और एक अँगनी के लिए। इन्दु और अँगनी के उठने से पहले वो घर आ गए। उन्होंने गिलहरी के लिए पिंजरा और इन्दु के लिए स्कूल बैग लिया था। वह इन्दु के स्कूल का पहला दिन था। जब दादाजी ने उन्हें यह तोहफा दिया तो वे बहुत ही खुश हुए।

चित्र: रुही सिन्हा, सातवीं, रॉयल कॉन्कार्ड इंटरनेशनल स्कूल, बेंगलुरु, कर्नाटक

मेरा पन्ना

चित्र: हर्ष रावत, 10 साल, मोटिवेशन लर्निंग सेंटर, नोएडा, उत्तर प्रदेश

दवाई

मनकुश गुर्जर
समूह-सागर, दस साल, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र सवाई माधोपुर, राजस्थान

एक बार हमें उज्ज्वल जी सर खिला रहे थे। खेलते समय मैं दौड़ रहा था। मैंने अरुण जी सर की चप्पल पहन रखी थी। चप्पलें बड़ी होने के कारण मेरा पैर फिसल गया और मैं गिर गया। मेरे अँगूठे में चोट लग गई। शैलेन्द्र जी सर ने दवाई लगाई, तब जाकर तीन-चार दिनों में ठीक हो पाया।

मेरी आपबीती

अनाम, मुस्कान संस्था भोपाल, मध्य प्रदेश

एक बार जब हम लकड़ी बीनकर घर आ रहे थे तो एक आदमी बाइक से आया और बोला कि तुम घर चलो हम तुम्हें नए खिलौने देंगे, कपड़े देंगे, अच्छे स्कूल में पढ़ाएँगे। ऐसा बोलते हुए लालच दे रहा था और हम उनकी बात मानकर बाइक में बैठ गए। वो आदमी हमें खेतों की ओर ले जा रहा था। चारों तरफ खेत ही खेत नज़र आ रहे थे। मन में कुछ अजीब-सी घबराहट होने लगी। बार-बार मन में यही ख्याल आ रहा था कि वो हमारे साथ कुछ गलत तो नहीं करेगा। हम बहुत डरे हुए-से थे और वहीं पर रोने लगे तब भी वह गाड़ी नहीं रोका। फिर दूर जगह जाकर रोका जहाँ पर सिर्फ एक ही घर था। घर में ताला लगा हुआ था। वो आदमी ताला तोड़कर हम दोनों को अन्दर ले जा रहा था तभी हम समझ गए कि ये आदमी ज़रूर कुछ हमारे साथ करने वाला है और हम किसी तरह वहाँ से जान बचाकर भाग गए। अँधेरा होनेवाला था और हम घर नहीं पहुँचे थे। हमारे पास पैसे भी नहीं थे जो किराया करके घर पहुँच जाएँ। फिर हमने किसी और आदमी से मदद माँगी।

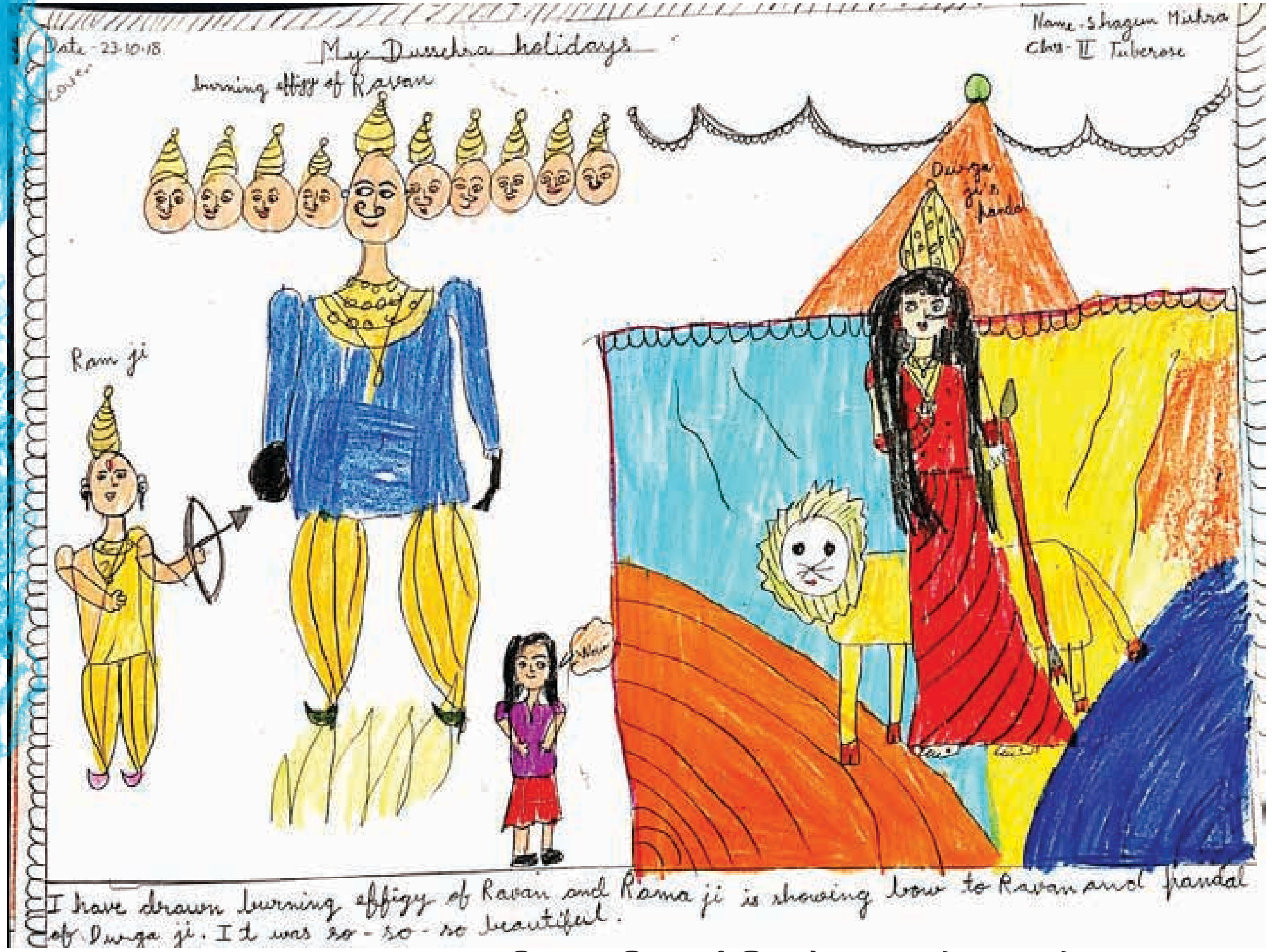

चित्र: श्याम मिश्रा, दूसरी, जिंगल बैल स्कूल, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

तोते ने खाई लाल मिर्च

सुजल, चौथी
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
गणेशपुर, उत्तराखण्ड

एक तोता था। वह लाल मिर्च खाता था। एक दिन उसे एक खेत में बहुत सारी लाल मिर्च दिखीं। वह नीचे आया और मिर्च खाने लगा। तभी वहाँ खेत का मालिक आया। वह बोला, "ओ तोते, तूने मेरी सारी मिर्च खा ली। अब मैं सब्ज़ी में क्या डालूँगा? ठहर जा, मैं वहीं आ रहा हूँ। अभी मज़ा चखाता हूँ।" तोते ने जल्दी से दो-तीन मिर्च तोड़ीं और उड़ गया। मालिक क्या कर पाता। उसे उड़ना तो आता नहीं था। बेचारा नीचे से गुस्से में चिल्लाया, "अरे ओ तोते तू कभी तो यहाँ आएगा। मैं तेरे लिए जाल लगाकर रखूँगा।" तोता बोला, "अच्छा हुआ, तुमने मुझे बता दिया। अब से मैं अच्छी तरह नीचे देखकर उतरूँगा।" मालिक चुप हो गया।

जगह ढूँढ निकाली

अमृता मेहता
सातवीं, सरदार पटेल विद्यालय
दिल्ली

यह घटना तब हुई थी मेरे साथ, जब मैं 2 साल की ही थी। मैं मेरे नाना के घर अहमदाबाद में रहती थी। वहाँ आसपास कुत्ते बहुत हैं। हरदम भौंकते रहते हैं। आज मेरी अहमदाबाद में रहने वाली दोस्त कुत्ते को देख भाग जाती है। अभी तो मैं भी डर जाती हूँ लेकिन जब मैं दो साल की थी तब नहीं डरती थी। बंगले में कुत्ते घुस ही जाते हैं। घर में आई हुई सीढ़ी चढ़कर ऊपर के कमरे में गर्मी से बचने के लिए बैठ जाते हैं। तो ऐसे ही एक बार एक कुत्ता ऊपर कमरे में बैठ गया। अब मुझे भी सीढ़ी चढ़कर ऊपर जाना था और कुत्ते को नीचे आना था। तब मैं चार पैर से चलती थी। रास्ते में वो मुझे मिल गया। माँ, नाना-नानी और माँ की दादी सब डरे हुए थे कि पता नहीं अब क्या होगा। पर कुत्ते और मैंने जगह ढूँढ निकाली। और कुत्ता गया नीचे और मैं गई ऊपर।

चित्र: राशि, चौथी, आनन्द निकेतन सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र

तुम भी जानो

पृथ्वी से, सौर मण्डल से भी कोसों मील दूर एक ग्रह है जिसकी खोज 2015 में अमरीकी अन्तरिक्ष संस्था नासा ने की। यह खोज उनके अन्तरिक्ष में मौजूद कैपलार टेलिस्कोप ने की। इसका नाम है K2-18b। यह ग्रह हमारी दुनिया का नहीं है। यह लियो नामक तारामण्डल में स्थित है और 110 प्रकाश साल की दूरी पर है (एक प्रकाश साल तय करने में हमें 137,000 साल लग जाएँगे)। यह सूरज से कम गरम एक लाल तारे को अपना केन्द्र बनाकर उसकी परिक्रमा करता है। इस पर तापमान 10 डिग्री सेल्शियस है, यानी कि हमारी जानकारी में पृथ्वी पर जैसा जीवन है उसके लिए यह ग्रह उपयुक्त है। और अब हमें इसके वायुमण्डल में जीवन के लिए ज़रूरी एक और चीज़ पानी का पता चला है।

फिर भी शायद हम इस ग्रह पर रह ना पाएँ। K2-18b पृथ्वी से दो गुना बड़ा और 8 गुना भारी है। यानी कि उसका गुरुत्वाकर्षण बल यहाँ से कहीं ज़्यादा, 8 गुना ज़्यादा है। यानी कि यहाँ पर औसतन हर मनुष्य का वज़न आधा टन होगा। साथ ही उस ग्रह पर पराबैंगनी (यूवी) किरणों से हमारे लिए कैंसर की सम्भावना कहीं ज़्यादा हो जाएगी। लेकिन फिर भी सबके मन में एक उम्मीद है - यहाँ शायद जीवन के लक्ष्य हमें मिल जाएँ। और अगर एक अन्य ग्रह पर पृथ्वी जैसे जीवों की सम्भावना बनती है तो शायद इससे अधिक ऐसे ग्रह भी हमें कायनात में मिल जाएँगे।

एक अन्य ग्रह में पहली बार मिला है - पानी

हिमा दास की रफ्तार

19 साल की हिमा दास ने इस साल मई में बारहवीं कक्षा पास कर ली। ज़्यादातर लोगों के लिए यह परीक्षा उनके जीवन की सबसे कठिन व तनावपूर्ण परीक्षा होती है। लेकिन असम के ढींग गाँव की हिमा ने इसके पहले ही इससे कहीं अधिक कठिन चुनौतियों का सामना किया है। 18 साल की उम्र में हिमा पहली भारतीय धावक बनी, जिसने 20 साल से कम उम्र की श्रेणी की विश्व प्रतियोगिता में रजत पदक जीता हो। 400 मीटर की दूरी को 51.26 सेकण्ड में पूरी करके हिमा ने एक नया राष्ट्रीय रिकार्ड कायम किया। धान की खेती करने वाले माँ-बाप की हिमा को फुटबॉल खेलने का शौक था। कीचड़ भरे मैदान में फुटबॉल खेल रही हिमा की रफ्तार देखकर उसके पीटी मास्टर ने उसे धावक बनने के लिए प्रोत्साहित किया। और सिर्फ 15 महीनों की ट्रेनिंग के बाद ढींग एक्सप्रेस जो चल पड़ी......

एक ऑक्टोपस जो पानी से बाहर शिकार करता है

शायद तुम्हें यह पता न हो कि ऑक्टोपस समुद्र से बाहर निकलकर ज़मीन पर भी चल सकते हैं। बिना कंकाल के इन जानवरों के लिए ऐसा करना आसान नहीं होगा, लेकिन ऑक्टोपस की कई किस्म ऐसा करती हैं। हाल ही में अमेरिका के पश्चिमी तट पर एक ऑक्टोपस को समुद्र तट पर एक पोखर से दूसरे में जाते हुए देखकर लोग आश्चर्यचकित रह गए। इन गुदगुदे जानवरों के लिए पानी से बाहर आना कठिन तो है ही, यह खतरे से खाली भी नहीं है - ये सिर्फ पानी में साँस ले पाते हैं और इस कारण ये बहुत देर के लिए बाहर नहीं रह सकते हैं। कहते हैं कि ये जानवर केकड़ों की खोज में ऐसा करते हैं।

माथापच्ची

1. क्या तुम्हें इसमें कोई गलती नज़र आ रही है?
2, 4, 6, 8, 10.....

2. ऊपर से देखने पर यह टॉवर A, B, C व D में से कैसा दिखाई देगा

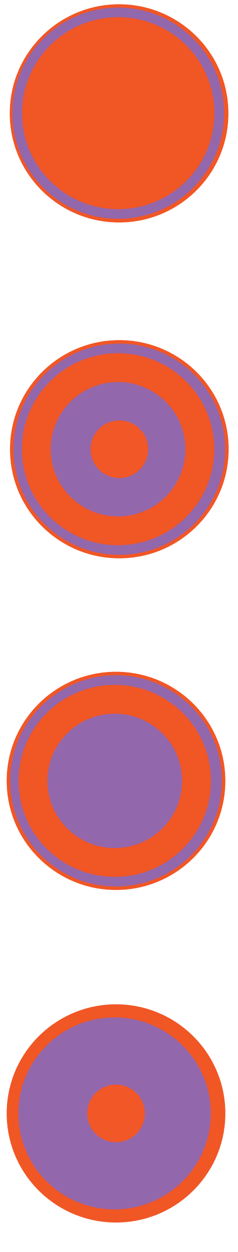

3. एक बैग में आठ अलग-अलग रंगों की कुल 64 गेंदें हैं। लाल रंग को मिलाकर हरेक रंग की आठ गेंदें हैं। तुम्हें बिना देखे बैग से इतनी गेंदें निकालनी हैं कि तुम्हारे पास लाल रंग की कम से कम 3 गेंदें ज़रूर हों। इसके लिए तुम कम से कम कितनी गेंदें निकालोगे?

4. रिदा ने अपने दोस्तों को बताया कि कल एक बड़ा-सा वाहन उसके ऊपर से गुज़र गया, लेकिन उसे बिलकुल भी चोट नहीं आई। वह झूठ नहीं बोल रही थी, पर ऐसा कैसे हो सकता है?

5. इरा, अर्श और ज़ेनी पार्क में खेल रहे थे। उनमें से किसी एक से पास ही रखी गाड़ी का काँच फूट गया। गाड़ी के मालिक ने पूछा कि काँच किसने फोड़ा तो तीनों ने यह जवाब दिए।

इरा: मैंने नहीं तोड़ा।

ज़ेनी: अर्श ने तोड़ा।

अर्श: ज़ेनी झूठ बोल रही है।

अगर तीनों में से सिर्फ एक ही सच बोल रहा हो तो काँच किसने तोड़ा?

6. क्या है जिसकी आँखों में उँगली डालो तो वह अपना मुँह खोलती और सबको काटती है?

7. वह क्या है जिसे सब पानी के अन्दर ही खाते हैं?

8. जूता पहना नहीं, समोसा खाया नहीं। क्यों?

फटाफट बताओ -

सीधी रहूँ तो सब को ढोती,
उलटी होकर सब मैं होती
(छफ)

दो पैरों का मैं हूँ घोड़ा, चलता हूँ पर थोड़ा-थोड़ा।
जो भी मेरे बीच में आया, झट से काटा, फट से तोड़ा।
(ताँजाफ)

तीन पैर की चम्पा रानी रोज़ नहाने जाती
दाल-भात का स्वाद न जाने, कच्चा आटा खाती
(ालकाज)

लाल गाय लकड़ी खाए,
पानी पिए मर जाए
(ाणाह)

माथापच्ची जवाब

1. हाँ, इसमें गलती को गतली लिखा है।

2. चूँकि टॉवर की सबसे ऊपर की लेयर ऑरेंज रंग की है। इसलिए C तो पक्के में नहीं हो सकता। ऊपर से देखने पर दूसरी लेयर नहीं दिखेगी क्योंकि पहली व दूसरी लेयर बराबर माप की हैं। तीसरी लेयर भी नहीं दिखेगी क्योंकि वो पहली व दूसरी लेयर से छोटी है। अगली लेयर जो दिखेगी वो होगी चौथी यानी कि पर्पल वाली। इसके बाद सबसे आखिरी वाली लेयर दिखेगी जो कि ऑरेंज है। इसलिए इसका जवाब होगा A।

3. बैग में 8 अलग-अलग रंगों की 64 गेंदें हैं, जिनमें से 8 लाल रंग की हैं। यानी कि लाल रंग की गेंदों को छोड़कर बैग में 56 गेंदें हुईं। इसलिए यह सम्भव है कि 56 गेंदें निकालने पर उनमें से कोई भी गेंद लाल रंग की ना हो। तो यह पक्का करने के लिए कम से कम 3 गेंदें लाल रंग की हों तुम्हें कुल 59 गेंदें निकालनी होंगी।
4. रिदा के ऊपर से हवाईजहाज़ गुज़रा था।
5. मान लो कि काँच इरा ने तोड़ा। तब इस सूरत में इरा झूठ बोल रही है। ज़ेनी भी झूठ बोल रही है। और अर्श सच कह रहा है कि ज़ेनी झूठ बोल रही है। यानी कि काँच इरा ने ही तोड़ा है।
6. कैंची
7. गोता
8. क्योंकि तला न था।

गणित है मज़ेदार: सितम्बर जवाब

1. हर डिज़ाइन में उससे पहले डिज़ाइन र से 2 तीलियाँ ज़्यादा हैं। तीसरे डिज़ाइन में 11 तीलियाँ हैं। तो डिज़ाइन 4 में 11 + 2 = 13 तीलियाँ होंगी, डिज़ाइन 5 में 13 + 2 = 15 तीलियाँ होंगी, डिज़ाइन 6 में 15 + 2 = 17 तीलियाँ होंगी। और डिज़ाइन 7 में 17 + 2 = 19 तीलियाँ होंगी।

2. 28वें डिज़ाइन में कितनी तीलियाँ होंगी यह जानने के लिए चलो पैर्टन को देखते हैं:
डिज़ाइन क्रमांक ----- तीलियों की संख्या

1 ----- 7
2 ----- 7 + 2 (7 और 2 एक बार)
3 ----- 7 + 2 + 2 (7 और 2 दो बार)
4 ----- 7 + 2 + 2 + 2 (7 और 2 तीन बार)
28 ----- 7 + 2....+2 (7 और 2 सत्ताईस बार)
= 7 + (27X2) = 7 + 54 = 61

भूलभुलैया का जवाब

सितम्बर की चित्र पहेली का जवाब

1 चाँ	द	2 नी		3 जै			4 ई	
द		ल		5 कि	लो	6मी	ट	7 र
		8 कं	क्री	ट		ना		सी
9 बा	10 स	ठ			11 ब	र	12 ग	द
	ड़		13 चौ	ख	ट		ज	
14 ट्र	क		रा		न		15 रा	16 ख
		17 चू	हा			18 चा		म्भा
19 प	त्थ	र		20 दू	र	बी	21 न	
न्नी		22 न	का	ब			23 ग	ढ्ढा

सुडोकू-23 का जवाब

3	1	7	6	4	9	8	2	5
4	5	9	8	1	2	6	7	3
6	8	2	3	7	5	1	9	4
1	6	5	4	9	3	2	8	7
7	2	4	5	8	1	3	6	9
8	9	3	2	6	7	5	4	1
2	7	6	1	5	4	9	3	8
5	4	8	9	3	6	7	1	2
9	3	1	7	2	8	4	5	6

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

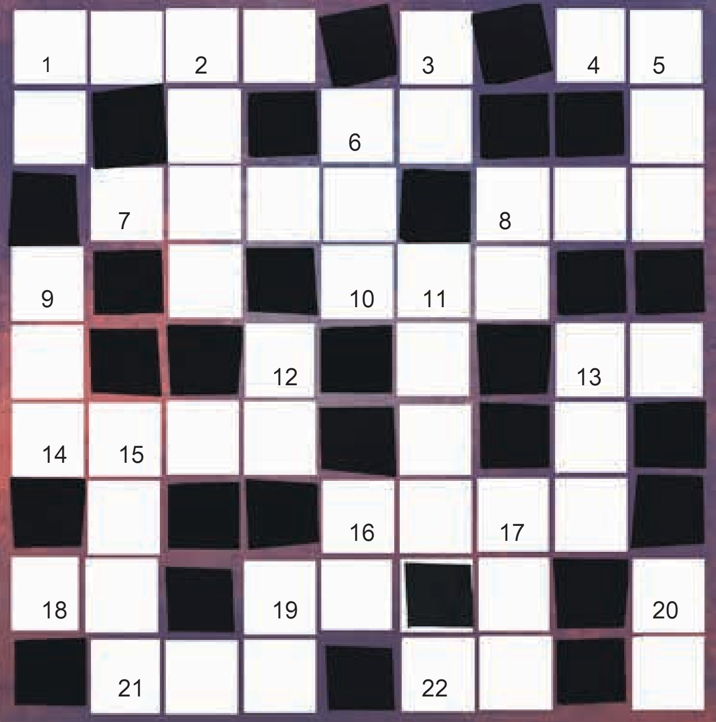

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

तिलचट्टे

श्रवण कुमार
चित्र: कनक शशि

खा-पी करके हट्टे-कट्टे
टहल रहे देखो तिलचट्टे

छुपने के हैं उनके अड्डे
घर में कई जगह हैं गड्ढे

सदा झाँकते हैं पटनी से
है लगाव उनको चटनी से

चटनी पीस माँ जब जातीं
तिलचट्टों की टोली आती

बची-खुची वे चटनी चाटें
सिलबट्टे संग खुशियाँ बाँटें

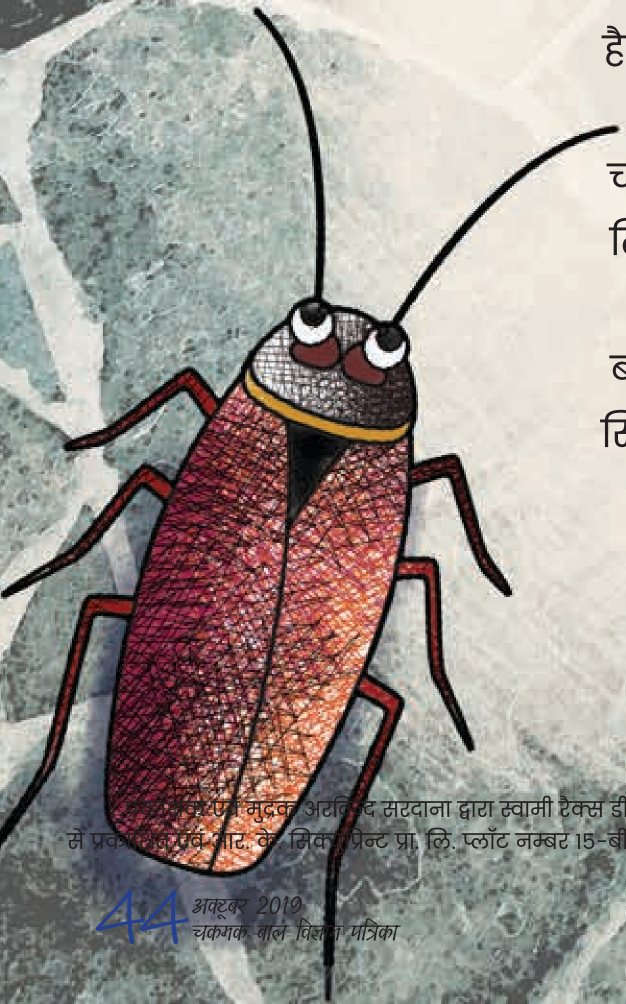

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के [illegible]
से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 [illegible]
सम्पादक: विनता विश्वनाथन